RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 2 अंक 9 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका

मई 2019

पेज संख्या : 36 राजसमंद

चुप समझिया री समझ है : संत भूरीबाई

देसूरी घाट का बकासुर भोग रहा राहगीरों को कुंभकर्णी निंद में सरकारें

अन्याय के खिलाफ और जनसेवा को समर्पित गुमनाम

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

Tension®

Durgesh Singh Bhati
7230059101

Bhupendra Singh Bhati
8769955630

Manufacture & Wholesaler of jeans, Shirt & Readymade Garments

999 में 4 शर्ट

999 में 2 जिंस

Shop No. 2, 100ft. Road, In Front of Kawadiya Hospital, Rajsamand (Raj.)
Tel. : 02952-221144 E-mail : tensionjeans1993@gmail.com

सुभाष पब्लिक सीनियर सेकण्डरी स्कूल, धोइन्दा

* विद्यालय के गौरव *

सत्र 2012-13 दसवीं बोर्ड जिला मेरिट में तृतीय स्थान

रवि कुमावत 92.33%

सत्र 2013-14 दसवीं बोर्ड राज्य स्तरीय मेरिट में 12वां व जिला मेरिट में 2 स्थान

देवेन्द्र गायरी 95.67%

सत्र 2014-15 12वीं विज्ञान बोर्ड जिला मेरिट में 12वां स्थान

काजल कुमावत 90.20%

सत्र 2014-15 मा.शि. बोर्ड 10वीं कक्षा जिला मेरिट में 10वां स्थान

अजयपाल सिंह राणा 94.17%

सत्र 2015-16 मा.शि. बोर्ड 10वीं कक्षा जिला मेरिट में 16वां स्थान

भरत कुमावत 92.83%

सत्र 2015-16 मा.शि. 10वीं बोर्ड की गौरवशाली प्रतिभाएं

नाजिस डायर 92.00%

सत्र 2016-17 मा.शि. 10वीं बोर्ड की गौरवशाली प्रतिभाएं

दिव्या कुमावत 96.33%

सत्र 2016-17 मा.शि. 10वीं बोर्ड की गौरवशाली प्रतिभाएं

प्रिन्स दवे 92.67%

राजसमन्द जिले में श्रेष्ठतम विद्यालय की ओर अग्रसर

प्रवेश प्रारम्भ सत्र 2019-20

कला वर्ग : इतिहास, भूगोल, संस्कृत साहित्य, अंग्रेजी साहित्य राजनैतिक विज्ञान, चित्रकला, संगीत, अर्थशास्त्र

वाणिज्य वर्ग : लेखाशास्त्र, अर्थशास्त्र, व्यवसाय अध्ययन कम्प्यूटर विज्ञान

विज्ञान वर्ग : भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीवन विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान

अंग्रेजी माध्यम
नर्सरी से 12वीं तक [कला, वाणिज्य, विज्ञान विषय]

हिन्दी माध्यम
नर्सरी से 12वीं तक
(कला, वाणिज्य विज्ञान विषय)

आर. के. हॉस्पीटल के पास, गायरिया वास रोड़, हाउसिंग बोर्ड, धोइन्दा, राजसमन्द
फोन : 02952-220403 मो. 9460446756, 9414173503 Email : sps.dhoinda@gmail.com

सम्पादकीय

जयवर्द्धन यात्रा

इस सम्पादकीय को सम्पादकीय कम और आपसे संवाद ज्यादा कह सकते हैं। एक छोटे से शहर में मासिक पुस्तक के प्रकाशन का सोचना, उसको साकार करना, निरन्तरता रखना और समय के साथ बेहतर होते रहना एक मुश्किल, मगर सुखद स्वप्न के सच होने जैसा प्रतीत होता है । **जयवर्द्धन** का सफर नशा मुक्ति, यज्ञोपवित संस्कार, जल संरक्षण, सामाजिक कमियां एवं व्यवस्था की हकीकत से रूबरू कराने जैसे विषयों को संजोने से शुरू हुआ ये सफर प्रत्येक नए विषय, नए विचार एवं नए जुड़ाव को समाहित करने को लेकर कटिबद्ध रहा है।

जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों के साक्षात्कार के माध्यम से न केवल उनके व्यक्तित्व के अनछुए पहलू सामने लाने का कार्य किया, अपितु माटी का लाल कॉलम के माध्यम से शहर को उन शख्सियत से परिचित करने का बीड़ा उठाया, जो अब हमारे बीच नहीं है, मगर राजसमन्द के इतिहास के श्रेष्ठतम व्यक्तित्व रहे हैं।

गुमनाम शख्सियत के माध्यम से निस्वार्थ भाव से सतत सक्रिय नामो को सबके समक्ष प्रस्तुत करने की मुहिम प्रारम्भ की, तो मंथन के साथ अब जनता से जुड़े विषय पर जनता को जोड़ने के प्रयास किए जाएंगे।राजसमन्द के प्रबुद्ध साहित्यकारों के विचारों को जन मानस तक पहुंचाने के साथ नव साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने में अग्रणी भूमिका का निर्वहन करते हुए प्रयास रहे कि राजसमन्द की साहित्यिक प्रतिभाओं को उचित मंच प्राप्त हो सके।

समय समय पर राजसमन्द के निकटवर्ती ग्रामीण परिवेश को उससे जुड़े हर पहलू के साथ आपके बीच लेकर आए, तो कई बार शहर के सामाजिक संस्थानों से भी सभी को रूबरू कराने के प्रयास करते रहे हैं।

विधानसभा से लोकसभा चुनावों में क्षेत्र के मुद्दे, प्रत्याशी, जनता का मूड एवं राजनीतिक विश्लेषण के माध्यम से इस चुनावी दौर को हर दृष्टिकोण से भांप कर आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करने के प्रयास किए। राजसमन्द को केंद्र में रखकर प्रारम्भ किया गया ये प्रयास सभी के सहयोग से अब क्षेत्र की सीमाओं से बाहर निकलते हुए न केवल अन्य शहरों अपितु राजस्थान के बाहर से प्रबुद्धजनों के विचार, सन्देश एवं प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है।

आज इस सम्पादकीय में किसी भी विषय को केंद्र में रखा जा सकता था, परन्तु मुझे लगा कि समय समय पर इस प्रयास का आंकलन एवं इसे सतत प्रोत्साहित करने वाले गुणीजनों का आभार आवश्यक हो जाता है। क्योंकि अब जयवर्द्धन किसी लेख, विचार, चर्चा, विमर्श, कविता, साहित्य, सूचना, साक्षात्कार एवं प्रतिक्रिया से आगे बढ़कर राजसमन्द की आवाज बनने के लिए प्रयासरत है, जो कि आपके सहयोग व सानिध्य के बिना सम्भव नहीं हो पाएगा।

हेमेन्द्रसिंह
राजसमंद

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय
जयवर्द्धन
website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक	विजय शर्मा
सह सम्पादक	हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी	सूर्यप्रकाश दीक्षित, हेमेन्द्रसिंह
विज्ञापन प्रबंधक	जितेन्द्र शर्मा
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)
वितरण सहयोगी	नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 9950084705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** देसूरी नाल लील रही जानें — पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** राजसमंद के ख्वाबों को हकीकत की दरकार — पेज - 7
3. **गुमनाम शख्सियत :** जनसेवा को समर्पित गुमनाम — पेज- 10
4. **अध्यात्म :** दुनिया में दो तरह के इंसान — पेज - 12
5. **प्रेरक कहानी :** उसे बच्चियों से नफरत थी — पेज - 13
6. **चुनावी व्यंग्य :** बंशी बजाओ नीरो — पेज - 14
7. **माटी का लाल** संत महात्मा भूरीबाई — पेज - 16
8. **तीखी मिर्ची :** प्राइवेट स्कूल के फायदे — पेज - 19
9. **मंथन :** करें मंथन, लिखे मन की बात — पेज - 20
10. **स्टूडेंट्स कॉलम :** लक्ष्य निर्धारण जरूरी — पेज - 22
11. **चुनावी चिंतन :** जागरूक नागरिक की भूमिका — पेज -24
12. **व्यंग्य :** सांड की रैली और नामांकन — पेज - 25
13. **कविताएं :** 1. ऐसा है मेरा इश्क 2. झील में जीवन — पेज -26
14. **मेरा गांव, मेर लोग :** श्री श्यामलाल वर्मा व श्री वरदीचंद सोनी — पेज - 30
15. **राजनीतिक पड़ाव :** चाहे जिसके वोट पड़े, जीत आपणी ही — पेज - 32
16. **मेवाड़ी चौपाल :** टाईं बांधवा रो टंटो — पेज -34

बकासूर भोग रहा राहगीरों को, कुंभकर्णी नींद में सोई सरकारें

हर माह आठ से दस हादसे, फिर भी चौड़ी नहीं हुई सड़क, उठे सवाल क्या सरकार से ऊपर है केन्द्रीय वन विभाग

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

महाभारत काल में अज्ञातवास के दौरान पांडव एक गांव में ठहरे, जहां बकासूर नामक असुर प्रतिदिन एक ग्रामीण का भोग लेता था। उस असुर से निजात पाने के लिए भीम ने बकासूर का वध का किया और ग्रामीणों को भयमुक्त किया। देसूरी की नाल मेवाड़ और मारवाड़ को जोड़ने एक सेतू है, मगर इस संबंध के नाम यह सेतू आए दिन राहगीरों का भोग ले रहा है और सरकारें कुंभकर्णी नींद में है।

राजस्थान में 7 सितम्बर 2007 को सबसे बड़े सड़क हादसे की गवाह बने राजसमंद व पाली जिले की सीमा पर स्थित देसूरी की नाल का पंजाब मोड़ पर डेढ़ दशक में सैकड़ों लोगों की जान लेने के बावजूद राज्य व केन्द्र सरकार का दिल नहीं पसीजा। सबसे बड़े सड़क हादसे से तत्कालीन सरकार ने भी सबक नहीं लिया और तीसरी बार सत्ता बदल गई, मगर आज तक देसूरी नाल में वन भूमि पर चौड़ी सड़क बनाने के लिए के लिए केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय से स्वीकृति नहीं मिल पाई। हालत यह है कि हर माह आठ से दस हादसे हो रहे हैं। अब लोग भी सवाल उठा रहे हैं कि क्या केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय अब केन्द्र सरकार से भी बड़ा हो गया है क्या। आखिर इस गंभीर समस्या का समाधान क्यों नहीं हो पाया। क्योंकि प्रदेश व देश में दोनों ही राजनीतिक दल भाजपा व कांग्रेस की सरकार बनें और केन्द्र सरकार में सत्तारुढ़ सरकार के सांसद होने के बावजूद इस प्रोजेक्ट पर कोई कारगर प्रयास नहीं किए गए। अब लोग पुलिस, प्रशासन, जनप्रतिनिधियों के साथ राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार की भूमिका पर सवाल उठा रहे हैं।

बेकाबू ट्रेलर नागदेवता मंदिर में घुसा, गुम्बद गिरा

मेवाड़- मारवाड़ के जुड़ाव में बड़ी बाधा

सामाजिक, सांस्कृतिक व व्यापारिक दृष्टि से भी मेवाड़ व मारवाड़ के जुड़ाव में देसूरी नाल का डेंजर जोन बड़ी बाधा है। नाल में करीब 7 किमी घाट सेक्शन की डेंजर जोन बना हुआ है, जहां कई जगह से सड़क टूटी है, तो सड़क किनारे 50 से सौ फीट तक गहरी खाई है। कुछ जगह विकट मोड़ भी है, जिससे हर वक्त वाहनों के खाई में गिरने का खतरा है। क्योंकि सड़क किनारे सुरक्षा दीवार भी नहीं है। साल दर साल लोगों की जान जाने के बाद भी जिला प्रशासन देसूरी की नाल में हादसों की रोकथाम के लिए पुख्ता प्रबंध नहीं कर रहा है। समय रहते देसूरी की नाल में कदम नहीं उठाए गए, तो हादसों में लोग इस तरह बेमौत मरते रहेंगे। यही वजह है कि मेवाड़ और मारवाड़ के बीच सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध नहीं बन पा रहे हैं, जिसका खमियाजा लोगों को भुगतना पड़ रहा है।

हादसा याद आते ही सिहर उठता है मन

हादसों की सबब बन चुकी देसूरी की नाल में 7 सितंबर 2007 में रामदेवरा जाते श्रद्धालुओं से भरा ट्रेलर 40 फीट गहरी खाई में गिर गया। तब हादसे में 89 लोगों की मौके पर मौत हो थी, जबकि 54 लोग घायल हो गए। बाद में मृतकों की संख्या में 100 से ऊपर हो गई थी। सभी मृतक व घायल सोनियाणा, महासतियों की मादड़ी व आस पास की ढाणियों के ही थे। आज भी वह हादसा याद आते ही क्षेत्रीय लोगों का मन सिहर उठता है।

तीखा मोड़, डेंजर जोन

देसूरी की नाल का घाट सेक्शन पांच किलोमीटर क्षेत्र में सुधारना है। घाट सेक्शन रिजर्व फोरेस्ट में होने के कारण आरएसआरडीसी को स्वीकृति नहीं मिल सकी थी। घाट में किलोमीटर 285/0 से 290/0 के सेक्शन को चौड़ा करना है। घाट में पहाड़ी काटकर मोड़ को सरल करना है।

मौत को मात दे रही ये पहाड़ी

देसूरी की नाल में यह है पंजाब मोड़, जहां सर्वाधिक हादसे होते हैं और बचाव की भी इसी जगह संभावना है। मोड़ के बाईं तरफ एक पहाड़ी से टकराकर बेकाबू बेकाबू बस, ट्रक व अन्य वाहन पलट जाते हैं, जिससे दूसरी तरफ 50 फीट गहरी खाई में गिरने से वाहन बच जाते हैं। एक हादसे में बेकाबू बस पहाड़ी से टकराने के बाद।

देसूरी नाल में हादसों की बानगी

- 28 मार्च 2013 को टैंकर पलटने से चालक की मौत
- 20 मार्च 2014 को कार पलटने से 8यात्री घायल
- 13 दिसम्बर 2014 को ट्रेक्टर ट्राली पलटने से 7 लोगों की मौत
- 28 मई 2015 को रोडवेज बस पलटी, आधा दर्जन लोग घायल
- 21 अगस्त 15 को पाउडर से भरा ट्रेलर बेकाबू होकर पलट गया
- 30 अक्टूबर 15 को बस पहाड़ी से टकराई, 49 लोग हुए घायल
- 7 अकटूबर 16 डम्पर के ब्रेक हुए फेल, चालक फंसा
- 14 जनवरी 2017 : पहाड़ी से टकराया ट्रेलर, दो की मौत
- 29 जून 2017 को बस पलटने से एक महिला की मौत, 24 घायल
- 14 सितम्बर 2017 को बस के ब्रेक फेल, 56लोगों हो गए घायल
- 12 अक्टूबर 2018 : बस पहाड़ी से टकरा पलटी, दस लोग घायल
- 26अक्टूबर को मिनी बस पलटने से 30 घायल, एक की मौत

देसूरी घाट सेक्शन में टूटे डिवाइडर

चारभुजा से पाली जाने वाले इस देसूरी की नाल के घाट सेक्शन में जगह जगह से सड़क भी टूटी हुई है। इससे सदैव हादसों का खतरा रहता है। जबकि मेवाड़ से मारवाड़ आवाजाही का व्यस्ततम रोड है। डेंजर जोन होने के बावजूद जिला प्रशासन इस ओर ध्यान नहीं दे रहा। पंजाब मोड से ऊपर पुरी रेलिंग टूटी और दस फीट तक रोड का एक छोर टूट कर अंदर खाई में गिर गया। ये सड़क पूरी क्षतिग्रस्त होने से हादसों के लिए खतरनाक बनी हुई है। वही पंजाब मोड पर रेलिंग और सामने वाले मोड पर प्रशासन की ओर से रेती डालकर दुर्घटना रोकने का प्रयास किया गया, लेकिन कारगर साबित नहीं हो पा रहा। राहगीरों की सुविधा के लिए संकेतक बोर्ड भी पूरे नहीं है।

संभागीय आयुक्त के प्रयास कागजों तक

देसूरी नाल के पंजाब मोड़ पर राज्य की सबसे बड़ी सड़क दुर्घटना घटित होने के बावजूद मार्ग को चौड़ा करने के प्रयास कागजों तक ही सीमित होकर रह गए। उदयपुर संभागीय आयुक्त भवानीसिंह देथा द्वारा वर्ष मार्च 2015 में सड़क को चौड़ा करने के लिए विशेष जांच रिपोर्ट तैयार कर राज्य सरकार व केन्द्र सरकार को भेज दी गई। संभागीय आयुक्त ने इस बारे में जंगल की जमीन के प्रत्यावर्तन (डाइवर्जन) का प्रस्ताव बनवाया था। इसके अलावा जिला प्रशासन द्वारा भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) की अलग बैठक भी ली, मगर इस समस्या का समाधान आज तक नहीं हो पाया।

दुर्घटना रोकथाम के नहीं उपाय

देसूरी की नाल में दिनोंदिन दुर्घटनाएं बढ़ने के बावजूद पुलिस व प्रशासन द्वारा कोई ठोस उपाय नहीं किए जा रहे हैं। इसके चलते सड़क दुर्घटनाओं पर कोई अंकुश नहीं है, जिससे पुलिस, प्रशासन व सार्वजनिक निर्माण विभाग की भूमिका पर भी सवाल खड़े हो रहे हैं।

राजसमंद और उम्मीदें

अर्से बाद भी राजसमंद के ख्वाबों को हकीकत के रंगों की दरकार

लोकसभा 2019 के चुनाव सम्पन्न हो गए, आपने हमें सुना, देखा और समझा है और हमने राजसमन्द के प्रतिनिधि के रूप में आपको चुना है। अब हम यह नहीं जानते कि आप किस राजनैतिक दल से है। राजसमंद सिर्फ यह जानता है कि आप हमारे अपने देश की संसद में प्रतिनिधि है और आपसे भी यही अपेक्षा है कि राजनैतिक प्रतिबद्धता के बावजूद आप हमारी जरूरतों को, हमारे सपनो को हकीकत के रंगो से सरोबार करें। बस और हमें याद रखना।

विकास के पथ पर राजसमंद जिला अब धीरज रखकर नहीं बैठ सकता है, बहुत कुछ होने के बावजूद एक तरह से कुछ अधूरा अधूरा सा है और वो हमारे ख्वाब है, हमारे सपने है, हमारी उम्मीदे हैं, जिन्हें आपको पूरी करनी है। आप जीत के बाद संतोष से बैठकर अपने आपको तसल्ली दें। यह आप तक तो ठीक है, पर हम और हमारी पीढ़ियां इसके लिए शायद माफ नहीं करेगी।

इसे आप हमारा निवेदन समझे, अपेक्षा समझे, उम्मीद समझे या फिर चेतावनी समझे। राजसमन्द साफ, सरल, स्पष्ट और सख्त शब्दों में जयवर्द्धन के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करना चाहता है। राजसमन्द के वाशिन्दे भोले है, पर भूल्लक्ड़ नहीं है। आज हमारे पास सब कुछ नहीं तो बहुत कुछ अवश्य ही है, राजसमंद जिले की दिग्दिगांत में प्रतिष्ठा है। सूमेरूपर्वत के समान अकूत सम्पदा है, धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, प्राकृतिक, साहित्यिक और आर्थिक वैभव है। फिर भी कुछ ऐसा है, जिससे कभी कभी नहीं, अक्सर यहां के तकरीबन हर वाशिन्दे को लगता है कुछ कमी है, जिसे हम बहुत कुछ कहते हैं। कुछ नहीं होने जैसा ही लगता है। उसे आपको पूरा करना है।

सांसद महोदय 10 अप्रेल 1991 को उदयपुर जिले से पृथक होकर अस्तित्व में आया राजसमंद जिला एकमात्र सड़क का जिला होने का उलाहना मिला, परन्तु तत्कालीन मुख्यमंत्री भैंरोसिंह शेखावत ने जिस सपने को संजोकर राजसमंद जिले की नींव रखी, वो 'सपना' आज हकीकत के सुनहरे रंगों से सरोबार होने को बेताब नज़र आने लगा है। कठिन डगर, मुश्किल मंजिल पर यहां वाशिन्दों के मजबूत इरादों ने मात्र 29 साल में वो कर दिखाया, जिसकी कल्पना करना भी आसान नहीं था। आज राजसमंद जिला 29 साल का कद्दावर, सर्वगुण- सम्पन्न, आसमान छूने को आतुर युवा है, समृद्धि इसकी संगनी है, चहुंओर जिसकी चर्चा है विकास पथ पर तेज गति से अग्रसर होने और मंजिलों को पाने को बेताब है हमारा राजसमंद।

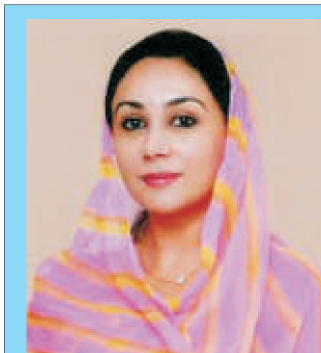

दीया कुमारी और देवकीनंदन गुर्जर में से जो भी भावी सांसद बने, उनसे अपेक्षाएं

ऐसे गौरवशाली लोकसभा क्षेत्र के प्रतिनिधित्व का अवसर आपको मिला है, यह आपका सौभाग्य भी है कि आपको भागीरथ बनने का अवसर मिला है। गंगा का पृथ्वी पर लाने के प्रयास में कई पीढ़ियां खप गई थी, पर श्रेय भागीरथ को मिला था। आपके लिए अवसर है, वरना वक्त तो अपना काम करेगा ही।

संगमरमर का खनन एवं प्रसंस्करण उद्योग जिले के दो लाख लोगों को प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध कराने में राजसमन्द जिला सफेद मार्बल के उत्पादन में सम्पूर्ण देश में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। जिले में हजारों टन सफेद मार्बल के भण्डार हैं। गत दो दशकों से यहां पर मार्बल खनन एवं प्रसंस्करण व्यवसाय में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। राजसमन्द का मार्बल देशभर में भवन निर्माण के लिए भेजा जाता है। कुछ वर्षों से विदेशों में भी निर्यात होने लगा है। जिले में लगभग चार हजार मार्बल खदानें, पांच सौ प्रसंस्करण इकाइयां (गैंगसॉ) तथा तीन हजार लघु कटर इकाइयां हैं। एक दशक से आधुनिक मेकेनाईज्ड तरीके से खनन प्रारम्भ होने से राजसमन्द को मार्बल उत्पादन के क्षेत्र में विश्व स्तरीय ख्याति प्राप्त हुई है।

इसके अलावा नाथद्वारा, चारभुजा आमेट क्षेत्र में लाईम स्टोन एवं डोलामाईट के विपुल भण्डार हैं, जिसका उपयोग चिप्स एवं चूना उद्योग में किया जाता है। देशभर में चिप्स की लगातार बढ़ती मांग से यहां चिप्स उत्पादन तेजी से बढ़ा है। नाथद्वारा तहसील क्षेत्र में चिप्स की दो सौ इकाइयां कार्यरत है, जिनमें प्रतिवर्ष तीन लाख टन सफेद चिप्स का उत्पादन होता है।

साथ ही नाथद्वारा तहसील क्षेत्र में कई सोप स्टोन की खदाने हैं। सोप स्टोन टेलकम पाउडर, साबुन एवं दवा उद्योग में काम आता है।

क्वाट्र्ज एवं फेल्सपार

राजसमंद में क्वाट्र्ज एवं फैल्सपार के भी भण्डार मिले हैं। विगत दशक से बड़ी मात्रा में खनन कार्य किया जा रहा है। जिले के खनन व्यवसाय को राजनैतिक संरक्षण की जरूरत है।

ऐतिहासिक पर्यटन व्यवसाय

आस्था का केन्द्र श्रीनाथजी जहां निराला है। उत्सव और त्यौहारों का वैभव श्रीनाथ मन्दिर के उत्सव, पर्वों और त्यौहारों का वैभव निराला है। यहां के उत्सवों निन्तरता के कारण नाथद्वारा को उत्सव नगरी भी कहा गया है। श्रीमद् वल्लभाचार्य जी द्वारा स्थापित श्रीमद्वल्लभ सम्प्रदाय में सेवा की प्रधानता है, प्रेम वात्सल्य और ममत्व के साथ आनन्द एवं उल्लारस को जीवन में उतारने के सिद्धान्त को प्रतिपादित करने वाले नाथद्वारा के श्रीनाथ के दर्शन करने प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु पर्यटक यहां आते हैं। पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय की प्रधान पीठ एवं श्रद्धालु वैष्णव भक्तों की धार्मिक आस्था का केन्द्र नाथद्वारा में मेवाड़, गुजरात और ब्रज संस्कृति के अद्भुत और अनुपम समिश्रण से समग्रता और उदारमना का भाव परिलक्षित होता है।

साहित्य- कला जगत की अमूल्य निधि

राजसमंद झील के किनारे कांकरोली में स्थित प्रभु श्री द्वारकाधीश का मन्दिर पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय की सप्त पीठों में तृतीय पीठ प्रन्यास के नाम से विख्यात है। झील के किनारे ऊंची पहाड़ी पर हवेलीनुमा मन्दिर दूर से ही दिखाई पड़ता है। मन्दिर प्रांगण में पौराणिक हस्तलिखित संस्कृत और हिन्दी के ग्रंथों का विशाल संग्रह है। यह स्थान विद्या विभाग कहलाता हैं, जहां प्राचीन और दुर्लभ चित्रों का संग्रह है। प्रभु द्वारकाधीश का मन्दिर जहां वैष्णव भक्तों की श्रद्धा उमड़ती है, वहीं साहित्य एवं कला जगत की अमूल्य निधि के रूप में भी इस स्थल का उल्लेखनीय स्थान है।

चारभुजानाथ मेवाड़ का प्राचीन तीर्थ

मेवाड़ के प्राचीन चार धाम में एक प्रमुख धाम श्री चारभुजानाथ जी का है। नाथद्वारा में प्रभु श्रीनाथजी के पधारने से पूर्व मेवाड़ क्षेत्र में केवल श्री चारभुजानाथ का ही विष्णु मन्दिर था, जिसकी आज भी सर्वत्र मान्यता है। प्रभु चारभुजानाथ में अटूट श्रद्धा भक्ति रखने वाले भक्तगण मेवाड़ के अलावा मारवाड़, मालवा और गुजरात से यहां आते हैं। भगवान चारभुजानाथ के मन्दिर में देवझूलनी एकादशी, फागोत्सव और अन्नकूट का उत्सव बड़े स्तर पर मनाया जाता है, जिसमें लाखों की संख्या में श्रद्धालु जन भाग लेते हैं।

ऐतिहासिक पर्यटन, गौरवशाली इतिहास के साक्षी

विश्व विरासत कुम्भलगढ़ दुर्ग

यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत का दर्जा मिलने से कुम्भलगढ़ को अब अन्तर्राष्ट्रीय पहचान मिली है। देश के अभेद्य, अजेय दुर्ग के रूप में विख्यात कुम्भलगढ़ सुदृढ़ स्थापत्य एवं बनावट के कारण विशिष्ट स्थान रखता है। इस किले का निर्माण मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने 1458 में करवाया था। कुम्भलगढ़ उनकी बेजोड़ कृति है। निर्माण कला की दृष्टि से यह कलात्मक होकर विस्तृत प्राचीर, प्राकृतिक सुषमा और बेजोड़ स्थापत्य का नमूना है। भारतीय शिल्प शास्त्र के तमाम मानकों के आधार पर यह श्रेष्ठ दुर्ग है। इस दुर्ग का 36 किलोमीटर लम्बा परकोटा विश्व में चीन की दीवार के बाद दूसरी बड़ी प्राचीर मानी जाती है। महाराणा प्रताप जैसे वीर योद्धा की जन्म स्थली इस दुर्ग में हुई थी। दुर्ग में बनी यज्ञवेदी वास्तु व स्थापत्य का बेजोड़ नमूना है, तो परिसर में बने 360 जैन हिन्दू मंदिरों की मूर्तियां भारतीय कला वैभव की थाती है। सुंदर प्राकृतिक वातावरण में राजपूताना के गौरवशाली इतिहास की याद ताजा करा देता है। भारतीय पुरातत्व विभाग के माध्यम से यहां गत दस वर्षों से संरक्षण कार्य चल रहा है। पर्यटकों के लिए सभी सुविधाएं भी यहां मुहैया कराई गई, पर वो पर्याप्त नहीं है।

प्रताप राष्ट्रीय स्मारक हल्दीघाटी

महाराणा प्रताप की अष्टधातु से निर्मित प्रतिमा उनके शौर्य की स्मृतियों को जीवन्त करती, वहीं यहां से दूर दूर तक अरावली

की दुर्गम घाटियों का नजारा हल्दीघाटी युद्ध की कठिन परिस्थितियां बयां करती है। हल्दीघाटी की युद्धतिथि पर तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्द्रकुमार गुजराल ने हल्दीघाटी में प्रदेश के प्रथम महाराणा प्रताप राष्ट्रीय स्मारक की स्थापना का शिलान्यास किया गया था। यह महाराणा प्रताप राष्ट्रीय स्मारक राजसमंद की ऐतिहासिक धरोहर की पहचान है। यह वही दर्रा है, जहां स्वतंत्रता प्रेमी महाराणा प्रताप ने अपने चंद सैनिकों के साथ बलशाली अकबर की विशाल सेना से लोहा लिया था। इतिहास प्रसिद्ध हल्दीघाटी युद्ध भूमि को भारतीय स्वतंत्रता की प्रेरणा स्थली भी कहा जाता है। हल्दीघाटी को मूल स्वरूप में लाने के लिए यहां गत वर्षों में मेवाड़ कॉम्पलेक्स के तहत काफी कार्य हुआ है। यहां पर अब भी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है।

राजसमंद झील-गोमती नदी

सृजन के साथ विध्वंस प्रकृति का नियम है। अरावली पर्वत माला की कोख से निकल राजसमंद क्षेत्र की धरा के आंचल को शस्य-श्यामला बनाने वाली नदी गोमती पर मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा राजसिंह द्वारा 1676 में निर्मित राजसमंद झील यों तो निर्माण के बाद लगभग सवा तीन सदी तक यदा-कदा अकाल का दंश यह नदी-झील झेलती ही रही मानव निर्मित विशाल पैमाने पर अवैज्ञानिक खनन, जंगलों की कटाई एवं अपशिष्ट निस्तारण की ओर लापरवाही के कारण कई बार तो इस झील के अस्तित्व पर ही संकट आ गया था 1999 से 2001 लगातार अकाल/अनावृष्टि/परिणाम राजसमंद झील खेल का मैदान तक बन गई थी। अपने जीवनकाल की प्रथम त्रासदी सन् 2000 में एशिया की सबसे बडी मीठे पानी की यह झील पूरी तरह से सूख गई थी। साथ ही वास्तु शिल्प का बैजोड स्थल नौ चौकी भी राजनैतिक संरक्षण की तलबगार है।

इन प्रमुख मुद्दो के साथ रेलवे ब्राडगेज, कला संस्कृति, वनो का विकास आदि कई मामले हैं, जिन्हें हम जयवर्द्धन के माध्यम से आपको स्मृत कराते रहेंगे। आप बस हमें याद रखना और हमारे सपनो को हकीकत के रंगो से सरोबार करते रहना। शुभकामनाओं के साथ।

अरविन्द मुखिया
अधिस्वीकृत स्वतंत्र पत्रकार
छोटा गोपाल पुरा, नाथद्वारा
जिला राजसमन्द (राजस्थान)
मो. 94141 72422

बीआर वैष्णव लगातार टॉप

राजसमंद. भारतीय जीवन बीमा निगम राजसमंद के विकास अधिकारी बीआर वैष्णव ने पुनः उदयपुर संभाग की वरियता सूची में सिरमोर स्थान बनाया है। उनके अव्वल मार्केटिंग नेतृत्व में कार्यरत विजेता टीम ने 3 हजार 616 पॉलिसी की बिक्री कर यह टॉप स्थान अर्जित किया है। साथ ही तीन साथियों को अन्तर्राष्ट्रीय मानक स्तर एमडीआरटी में क्वालीफाई करवाकर राजसमंद जिले का नाम उत्तरी क्षेत्र में रोशन किया। इस उपलब्धि पर वरिष्ठ मंडल प्रबंधक संजय भार्गव ने वैष्णव को सम्मानित किया। वैष्णव की प्रदेश स्तर पर तृतीय रैंक है।

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

अन्याय के खिलाफ और जनसेवा को समर्पित गुमनाम

चमकते हुए सूरज को बादलों की फिक्र नहीं हुआ नहीं करती है। इसी बात को चरितार्थ किया है कांकरोली में जन्मे मंदिर मार्ग रेती मोहल्ले के उस ... शर्मा को, जिसने बचपन से ही मानव सेवा को अपनी जिंदगी बना लिया। अल्हड़, मस्त मौला रहने वाले उस शख्स के बारे में हम जितनी भी बात करें, कम ही होगी। माता पिता दोनों ही शिक्षा विभाग में शिक्षक के रूप में कार्यरत थे। जब वे 9 वर्ष के थे, तभी उनके पिताजी के मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया और पहले तो माताजी को स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति कराई। फिर पिताजी देश सेवा की राह पर चल दिए। शर्मा का बचपन काफी कठिन परिस्थितियों में गुजरा, लेकिन इसका नाम मात्र भी उन पर असर नहीं पड़ा। जब 11 वर्ष के थे, तो तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू एरिकेशन गार्डन पर स्थित एरोड्रम पर उतरे, तो उन्होंने जिस बालक के कंधे पर अपना हाथ रखा और कमला नेहरू हॉस्पीटल की नींव रखी। आज भी 84 वर्ष की उम्र में भी वहीं कंधे कमला नेहरु अस्पताल के समग्र उत्थान की जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

ये है शर्मा दम्पती, पत्नी का देहांत हो गया है। पत्नी भी ताउम्र अपने पति के साथ हर सेवा कार्य में सहयोगी रही।

उस वक्त यह हॉस्पीटल विट्ठल विलास बाग जो आज बड़ौदा बैंक के पीछे वाली जगह पर बनने वाला था, जहां पर उसका शिलान्यास भी हुआ और पंडितजी ने उसकी आधारशिला भी रखी, लेकिन किन्ही कारणों से वह अस्पताल उस जगह पर नहीं बन सका।

इसी बीच उस बालक के भाई की उचित इलाज नहीं मिलने के कारण मृत्यु हो जाना, उनको अंदर तक झकझोर गया और उन्होंने ठान लिया की मुझे मानव मातृ की सेवा के लिए हॉस्पीटल बनाना ही है। कई कानूनी दांवपेचो में उलझकर आखिर एक समिति का गठन किया गया और भीलवाड़ा रोड पर सरकार की ओर से भूमि आवंटित करवाकर उस पर निर्माण कार्य शुरू कराया गया।

आज इनके प्रयास से नगर के मध्य कमला नेहरू चिकित्सालय कई रोगियों की जिंदगी बचाने में कारगर सिद्ध हुआ है। पेशे से शिक्षक होते हुए इन्होंने अपने परिवार के पालन पोषण के बाद जो भी पैसा बचा, वह इसी अस्पताल में लगा दिया। आज भी उनकी पेंशन की ज्यादातर राशि इसी हॉस्पीटल व अन्य मानवसेवा के कार्यों पर खर्च हो रही है।

इनकी खुद्दारी के किस्से आज पूरे राजसमंद जिले में हर जगह हर गली, हर मोहल्ले में एक सांस बनके लोगों के दिलों में एक ऊर्जा का संचार करते हुए नजर आते हैं। वह कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा का एक प्रयोग है और सच में परमात्मा ने उन पर जो प्रयोग किया है। उन्होंने कई लोगों को नेक रस्ते पर चलना सिखाया है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन एक उपन्यास है। अगर उस उपन्यास के हर पत्ते पर उसके अच्छे कार्य संपादित हो जाए, यह दुनिया बहुत खूबसूरत नजर आने लगे अपनी फकीरी अंदाज से रहने वाला यह शख्स किसी सुल्तान से कम नहीं नजर आता है।

धोईदा विद्यालय में जब उनकी नियुक्ति हुई, तो उस स्कूल के चारदीवारी नहीं थी। लोग शौच के लिए उस विद्यालय के मैदान को काम में लेते थे। धीरे- धीरे लोग उस पर कब्जे भी करने लग गए, तभी एक कार्यक्रम में जिला कलक्टर विद्यालय पहुंचे, तभी उन्होंने विद्यालय के मैदान में शौच व अतिक्रमण के बारे में शिकायत की। इस पर जिला कलक्टर के आदेश पर सारे कब्जों को हटाया गया और कांटो की बाड़ लगाई गई। उन्होंने जैन समाज को प्रेरित करके वहां एक बड़ा हॉल भी बच्चों के लिए बनवा दिया।

जिंदगी के कई उतार– चढ़ाव के बीच इन्होंने कभी हार नहीं मानी। हमेशा जिंदगी को ऐसे जिया कि यह जिंदगी सिर्फ और सिर्फ लोगों के लिए बनी है। इसमें अपना तन, मन, धन और संपूर्ण जीवन लगाने के बाद भी कभी एक माला तक नहीं पहनी। पुरस्कार स्वरूप इन्होंने आने वाली पीढ़ी के लिए एक विरासत के रूप में जीता जागता इतिहास दे दिया है।

इन सारे कार्यों में उनकी धर्मपत्नी का साथ हमेशा हर पल रहा। उन्होंने बताया कि नाथद्वारा के स्वतंत्रता सेनानी नरेंद्रपालसिह चौधरी के साथ जब 11 दिन जयपुर में रहने का अवसर प्राप्त हुआ और उनकी कार्यशैली को देखा, तो इनको लगा इंसान अपने आप महान नहीं होता, उसके कर्म उसको महान बनाते हैं। स्वतंत्रता सेनानी नरेंद्र पाल जी जो एक शख्सियत थे, लेकिन कभी भी उन्होंने इस बात का कोई अभिमान नहीं किया। वह जिंदगी आम इंसान की तरह जीते थे। कई ऑफिसर उनके आगे पीछे घूमते थे, लेकिन उन्होंने कभी भी उस चीज को अहमियत नहीं दी। जब यह सारा वाक्या उनकी नजरों के सामने से होकर गुजरा, तो उनका अभिमान उसी वक्त खत्म हो गया।

महंगा सामान दिया, तो खोल दी दुकान

जब शर्मा एक विद्यालय में कार्यरत थे, तभी अजमेर जिले के बदनौर गांव में एक किराणा दुकान से विद्यालयों के शिक्षक व ग्रामवासी किराणा सामान खरीदते थे, मगर वे हर सामग्री पर मूल्य काफी ज्यादा वसूलते थे। इसके लिए शर्मा ने किराणा व्यवसायी को समझाया कि इतनी महंगी दर में सामग्री नहीं बेचें, लेकिन व्यवसायी उचित दर पर किराणा सामग्री देने को तैयार नहीं हुआ, तो शर्मा ने शहर से ट्रक भरकर किराणा सामग्री खरीद ली, जिसे गांव में विद्यालय के पास एक कमरा किराए लेकर रखवा दी। उचित मूल्य उपभोक्ता भंडार के नाम से प्रचार किया, जहां से न सिर्फ शिक्षक खरीदते थे, बल्कि गांव के लोग भी किराणा सामग्री खरीदने लग गए। तब किराणा व्यवसायी को गलती का अहसास हुआ और क्षमा मांगते हुए कहा कि वह भविष्य में कभी महंगी दर में सामग्री नहीं बेचेगा। साथ ही उचित मूल्य उपभोक्ता भंडार पर पड़ी सारी किराणा सामग्री भी वह खरीद लेगा। तब भंडार बंद किया और किराणा व्यवसायी को सबक सिखाया। इस तरह वे हर जगह अन्याय के खिलाफ लड़ते रहे।

बीमार को स्वस्थ कर बनाया आत्मनिर्भर

कमला नेहरु अस्पताल में एक दिन एक निर्धन भील समुदाय का मरीज दवा के पैसे नहीं होने के कारण महंगा इलाज नहीं करवा पा रहा था। पति की गंभीर बीमारी के चलते पत्नी परेशान हो रही थी। यह बात जब शर्मा को पता चली, तो वे पहुंच गए और तत्काल जेब से पैसे देकर उसे दवाइयां उपलब्ध करवाई। लंबा इलाज चलने पर नियमित संपर्क में रहे। फिर वह स्वस्थ हो गया, मगर चिकित्सकों ने कठिन श्रम नहीं करने की सलाह दी। ऐसे में जब परिवार पालना दुभर हो गया, तब शर्मा ने जेब से डाउन पेमेंट जमा कराया और टेम्पो दिलवाकर उसे आत्मनिर्भर बनाया। भील परिवार इस फरिश्ते का अहसानमंद है। यह सिर्फ एक कहानी है, जबकि इस गुमनाम शख्सियत की इसी तरह की अनगिनत कहानियां है।

बच्चों में बांटते है खुशियां

कहते हैं नेहरूजी को बच्चों से बहुत प्यार था। इसी तरह शर्मा को छोटे छोटे नन्हें बच्चों से बहुत प्रेम है। शर्मा जब घर से निकलते हैं तो रास्ते में जहां भी नन्हें बच्चे दिख जाते तो उन्हें चॉकलेट देकर उनकी एक फोटो अपने मोबाइल में कैद कर लेते हैं। दूसरे दिन उस फोटो की प्रिंट निकलवाकर उस बच्चे के घर पहुंचाते हैं। अपनी फोटो को देखकर छोटे बच्चे बहुत खुश होते हैं। ऐसे में कई बच्चों के पते भूल जाने की वजह उनके घर पर बच्चों के फोटो का ढेर पड़ा है।

सार्वजनिक समस्या के समाधान का जुनून

वर्तमान समय में जहां इंसान स्वार्थी होकर अपने स्वयं के विकास पर सीमित हो गया, ऐसे में सार्वजनिक समस्याओं पर बात करना कोई भी पसंद नहीं करता है। जनप्रतिनिधि भी अपने स्वार्थ के सार्वजनिक कार्यों में रूचि लेते हैं। ऐसे में सार्वजनिक समस्याओं पर बोलने वाला कोई नहीं रह जाता है। शहर की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी समस्या के निस्तारण के लिए सदैव अग्रणी रहते हैं। ऐसे में नौचोकी पाल, विद्यालय, श्री द्वारकाधीश मंदिर की सम्पत्ति खुर्दबुर्द होने के खिलाफ, सरकारी जमीन पर अतिक्रमण, बस स्टैंड सरीखी कई सार्वजनिक समस्याओं को लेकर अदालत तक का दरवाजा खटखटाया। कुछ मामलों में आज भी स्वयं के खर्चे पर अदालत में केस लड़ रहे हैं।

आज भी यह मानव सेवा की यात्रा अनवरत जारी है, बिना किसी नाम के, लोभ - मोह के। यह आलेख लिखकर हम भी अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। क्योंकि उन्होंने यहीं कहा कि आप मेरे बारे में लिखिए, बेशक लिखिए, लेकिन मेरा नाम कहीं मत लिखना। ऐसी राजसमंद की गुमनाम शख्सियत को हमारा सलाम।

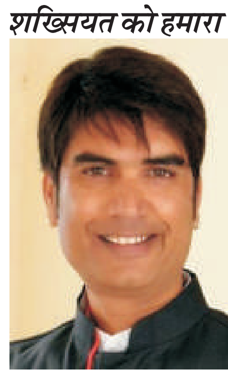

प्रस्तुति :

राहुल दीक्षित,
विजय शर्मा
राजसमंद

दुनिया में दो तरह के इंसान

तिब्बत में एक पुरानी कथा है कि दो भाई थे। पिता मर गया, तो उनके पास सौ घोड़े थे। घोड़े का काम था। सवारियों को लाने- ले जाने का काम था। तो पिता मरते वक्त बड़े भाई को कह गया कि तू बुद्धिमान है, छोटा तो अभी छोटा है। तू अपनी मर्जी से जैसा भी बंटवारा करना चाहे, कर देना। तो बड़े भाई ने बंटवारा कर दिया। 99 घोड़े उसने रख लिए और एक घोड़ा छोटे भाई को दे दिया। आस- पास के लोग चौंके भी। पड़ोसियों ने कहा भी कि यह तुम क्या कर रहे हो? तो बड़े भाई ने कहा कि मामला ऐसा है, यह अभी छोटा है, समझ कम है। 99 कैसे सम्भालेगा? तो मैं 99 ले लेता हूं और एक उसे दे देता हूं।

ठीक छोटा भी थोड़े दिन में बड़ा हो गया, लेकिन वह एक से काफी प्रसन्न था। एक से काम चल जाता था। वह खुद ही सारा काम कर लेता और नौकर नहीं रखने पड़ते थे। अलग इंतजाम नहीं करना पड़ता था। वह खुद ही शहर चला जाता था। यात्रा करवा आता था लोगों के लिए। उसका भोजन का काम चल जाता था। लेकिन बड़ा भाई बड़ा परेशान था। 99 घोड़े थे और 99 चक्कर थे। नौकर रखने पड़ते। अस्तबल बनाना पड़ता। कभी कोई घोड़ा बीमार हो जाता, कभी कुछ हो जाता। कभी कोई घोड़ा भाग जाता, कभी कोई नौकर न लौटता। रात हो जाती, देर हो जाती, वह जागता, वह बहुत परेशान था।

एक दिन आकर उसने अपने छोटे भाई को कहा कि तुझसे मेरी एक प्रार्थना है कि तेरा जो एक घोड़ा है, वह भी तू मुझे दे दे। उसने कहा- क्यों? तो उस बड़े भाई ने कहा- तेरे पास एक ही घोड़ा है, नहीं भी रहा तो कुछ ज्यादा नहीं खो जाएगा। मेरे पास 99 हैं। अगर एक मुझे और मिल जाए तो सौ हो जाएंगे। पर मेरे लिए बड़ा सवाल है। क्योंकि मेरे पास 99 हैं। एक मिलते ही पूरी सेंचुरी, पूरे 100 हो जाएंगे। तो मेरी प्रतिष्ठा और इज्जत का सवाल है। अपने बाप के पास 100 घोड़े थे। कम से कम बाप की इज्जत का भी इसमें सवाल जुड़ा हुआ है। छोटे भाई ने कहा- आप यह घोड़ा भी ले जाएं। क्योंकि मेरा अनुभव यह है कि 99 में आपको मैं बड़ी तकलीफ में देखता हूं, तो मैं सोचता हूं। एक में भी 99 बंटे नहीं, लेकिन थोड़ी बहुत तकलीफ तो होगी ही। यह भी आप ले जाएं।

तो वह छोटा उस दिन से इतने आनन्द में हो गया। क्योंकि अब वह खुद ही घोड़े का काम करने लगा। अब तक कभी घोड़ा बीमार पड़ता था, कभी दवा लानी पड़ती थी, कभी घोड़ा राजी नहीं होता था, जाने कोय कभी थककर बैठ जाता था। हजार पंचायतें होती थीं। वह भी बात खत्म हो गई। अब तक घोड़े की नौकरी करनी पड़ती थी। उसकी लगाम पकड़कर चलानी पड़ती थी, वह बात भी खत्म हो गई। अपना मालिक हो गया। अब वह खुद ही बोझ ले लेता, लोगों को कंधे पर बिठा लेता और यात्रा कराता। लेकिन बड़ा बहुत परेशान हो गया। वह बीमार ही रहने लगा। क्योंकि सौ में से अब कहीं एकाध कम न हो जाए, कोई घोड़ा मर न जाए, कोई घोड़ा खो न जाए, नहीं तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी।

यह कहानी अकसर कहा करता था- एक तिब्बती फकीर। वह कहता था- मैंने दो ही तरह के आदमी देखें, एक वे जो वस्तुओं पर इतना भरोसा कर लेते हैं कि उनकी वजह से ही परेशान हो जाते हैं और एक वे, जो अपने पर इतने भरोसे से भरे होते हैं कि वस्तुएं उन्हें परेशान नहीं कर पातीं। दो ही तरह के लोग हैं इस पृथ्वी पर। दूसरी तरह के लोग बहुत कम हैं। इसलिए पृथ्वी पर आनंद बहुत कम है। पहले तरह के लोग बहुत हैं, इसलिए पृथ्वी पर दु:ख बहुत है।

- ओशो

उसे बच्चियों से नफरत थी

कब से देखती आ रही थी उसे, लाल लाल आंखों वाला डरावना सा युवक। मेरे घर के सामने वाले मोड़ पर उसकी छोटी सी चाय की दुकान थी। बच्चियों से उसे कोई खास नफरत थी। छोटी बच्चियों को सड़क पर खेलते देखा नहीं कि भगा देता। मुझे उसकी इस आदत से खासी चिढ़ थी।

वैसे इस आदत के सिवाय उसमें कुछ भी आपत्तिजनक नहीं था। दिनभर चुपचाप अपना काम करता रहता। मैं एक स्थानीय स्कूल में पढ़ाती थी। पति बिजनेस के सिलसिले में ज्यादातर बाहर रहते थे। इस अकेलेपन को दूर करने के लिए शौकिया तौर पर शुरू किया गया पठन पाठन अब मेरी जिंदगी बन चुका था।

दिसम्बर का महीना था और वार्षिकोत्सव की तैयारी चल रही थी। मेरी सहयोगी शिक्षिका नहीं आई थीं और मेरी मेज पर ढेर सारा काम था। इसलिए मुझे काम निबटाते निबटाते काफी देर हो गई थी। स्कूल से बाहर निकली तो शाम का झुटपुटा सा हो चुका था। सर्दियों में वैसे भी शाम जल्दी हो जाती है। बाहर आकर जल्दी से स्कुटी निकालने की कोशिश की तो देखा कि एक पहिया पंक्चर है, उफ... अब मैं क्या करुं। सोचा आज ऑटो से चली जाती हूं। पर जब सड़क पर पहुंची तो देखा एक भी ऑटो नहीं। आसपास मौजूद लोगों से पूछने पर पता चला कि ऑटो वालों की हड़ताल चल रही है। घर एक संकरी गली के अंदर था, जहां बसें नहीं जाती थीं। शाम के गहराते अंधेरे के साथ मेरा डर भी गहराता जा रहा था। तभी वहां वहीं डरावना सा युवक रुका। अपनी खटारा सी बाइक लिए, शायद दुकान बंद कर लौट रहा था।

अरे दीदी, क्या हुआ? यहां क्यों खड़ी हो? उसने बड़ी सहजता से पूछा। मैं एक पल को घबरा सी गई, पर मेरे पास उस समय कोई चारा नहीं था। वहां मौजूद लोगों को मैं जानती भी नहीं थी। डरते डरते मैंने उसे कारण बता दिया। आइए, मैं आपको घर छोड़ दूं। उसने गंभीरतापूर्वक कहा।

मैं आशंकाओं से घिरी खड़ी थी। वहां उपस्थित लोग भी मुझे ही प्रश्नवाचक दृष्टि से देखे जा रहे थे। आखिर मैं चुपचाप उसकी बाइक पर बैठ गई। कुल 3 किलोमीटर का सफर मुझे सदियों सा लंबा लगा था। हालांकि वैसी कोई बात नहीं हुई, पर घर के सामने पहुंचते ही मुझे तसल्ली सी मिली। वो मुझे छोड़कर मुड़ा ही था कि न जाने क्यों मैं कह बैठी– चाय पीकर जाना।

उसने बिना प्रतिकार के मेरी बात मान ली थी। मैं मिनटों में चाय बनाकर ले आई थी। वो चुपचाप नजरें झुकाए चाय पीता रहा। मुझे अब ठीक ठीक याद नहीं पर शायद मैं उसे घूर रही थी। उसे भी जल्दी ही महसूस हुआ, तभी उसने नजरें उठाईं। मुझे अपनी ओर देखते देख कह बैठा, जानता हूं दीदी, आप भी मुझे दूसरों की तरह गलत समझती हैं।

न, नहीं तो! मैं अस्फुट स्वर में बोली थी। उसकी आंखों में नमी तैर आई थी। शायद वो आज सब कुछ कह डालना चाहता था। मैंने भी आंखों से उसे अनुमति दे दी थी। जानती हो दीदी, मैं सात साल का था और दिदिया 12 साल की जब बापू की मौत हो गई। मां के सामने हमारी जिम्मेदारी थी। मां दिनभर घरों में काम करती और मैं और दिदिया घर पर रहते, अकेले। दिदिया बड़ी प्यारी थी, एकदम गुड़िया जैसी। उस दिन मैं और दिदिया गली में खेल रहे थे कि चार हट्टे-कट्टे गुंडे मेरी दिदिया को उठा ले गए, मेरी आंखों के सामने। मैं चिल्लाता रहा, पर कोई मदद के लिए नहीं आया। अगले दिन चौराहे पर दिदिया की लाश मिली थी। मेरी तो दुनिया ही तबाह हो गई थी, अम्मा की भी। तब से अम्मा ने वो गांव छोड़ दिया और मुझे लेकर शहर आ गई। पर आज भी जब सड़क पर खेलती किसी लड़की को देखता हूं, तो दिदिया याद आ जाती है। कहीं किसी के साथ दिदिया जैसा कुछ...। आगे के शब्द उसकी हिचकियों में खो गए थे और मेरे मन का सारा मेल उसके आंसुओं के साथ धुलता जा रहा था। अब मुझे उसकी आंखें डरावनी नहीं दिख रही थीं, उन आंखों में अब मुझे सिर्फ एक भाई दिखाई दे रहा था, सिर्फ एक भाई।

अर्चना आनंद भारती
आसनसोल, पश्चिम बंगाल

बंशी बजाओ नीरो

नीरो जी जो थे कोई पैदाइशी बंसीवादक नहीं थे। उन्होंने संगीत की क्लास भी नहीं की थी। हां, उन्हें बंसी बजाने का शौक था। रोम में जब भी आग लगती थी नीरो जी बंसी बजाते थे। बंसी के साथ बजता था करताल जो भक्तगण बजाते थे। वादन ससुर हो रहा है या असुर इससे नीरोजी को कोई वास्ता नहीं था। वास्तव में वह अपनी तान सुनते नहीं थे सुनने वाले केवल भक्तगण थे, जो वाह के अलावा कुछ बोलते नहीं थे। और कुछ बोलने वालों को चुप कराने का एक अलग विभाग था जो स्याही वगैरह से लैस रहता था और कहीं भी किसी को भी कूटने की कला में पारंगत था। कुल किस्सा कोताह यह कि नीरो जी के बंसी वादन में कतई व्यवधान नहीं होता था। रोम जब भी जलता नीरोजी बंसी बजाते। रोम को जलना था वह जलता रहता था। नीरो जी कूंज में बैठकर बंसी बजाते रहे।

दंगे हों, कत्लेआम हो, धर्म के नाम पर किसी को कूटा जाये उनके बंसीवादन में कोई फर्क नहीं पड़ता था। श्रद्धालु इसका अर्थ यह न समझें कि नीरोजी को प्रजा से प्यार नहीं था। उन्हें था तभी तो अपने मन की बात प्रजा तक पहुंचाने के लिए एक विभाग खोल रखा था, जिसमें नाना प्रकार के अधिवक्ता और प्रवक्ता पाए जाते थे। वे राजा के मन की बात प्रजा को बताते थे। राजा भी झरोखा दर्शन के माध्यम से प्रजा के हालचाल जान लिया करता था। राजा जब भी भावुक होता था, तो अपने बचपन की कथाएं सुनाता था। उन्हीं की जुबानी लोगों को ज्ञात हुआ कि नीरो जी बचपन में बिल्कुल बच्चे थे। बेचारे चल भी नहीं पाते थे। बोल भी नहीं पाते थे। कितने कठिन दिन थे। भूख लगने पर नीप्पल से दूध पीना यानी अपने हाथ भी नहीं चलते थे। महीनों तक तो नंगे घूमे। किसी ने कच्छा पहना दिया तो पहन लिया, नहीं तो नंगे रह लिया। छ: महीने तक तो दूध के अलावा कोई आहार नहीं लिया। बचपन से ही त्यागी प्रवृति के थे। उसके बाद भी दलिया, खिचड़ी और जौ के हलुआ पर दिन कटे। कितने बेवश थे नीरो जी।

बचपन के दिनों को याद करके नीरो जी आज भी भावुक हो जाते हैं। उन्हें मां की याद बहुत आती है। मां उनके नाक पोंछ दिया करती थी। विरोधी तो चाहते ही थे कि बहती रहे। नीरो जी जब अत्यधिक भावुक हो जाते थे तो बंसी बजाने चले जाते थे। बंसी वादन में उन्हें सबसे ज्यादा जो बात अच्छी लगती थी वह थी उंगलियों के इशारे पर स्वर का बदल जाना। उंगलियों के इशारे पर ही वह सबके सुर बदल दिया करते थे।

एक बार की कथा है कि उनके राज्य में लेखकों और कलाकारों को पीड़ा होने लगी। पीड़ा के कारणों का ठीक-ठीक ज्ञान तो नहीं था, लेकिन सबके पेट में अलग-अलग प्रकार का दर्द था। किसी को राजा से शूल था, तो किसी को उनके वादन से उदरपीड़ा थी। किसी को उनके मन की बात पेट में चुभ रही थी, तो किसी को उनके कूंज में बैठने की शैली पसंद नहीं थी। एक बात तय थी कि सबके पेट में दर्द था। पेट दर्द के नाम पर लेखकों ने तय किया कि अपनी कलम राजा को सौंप देंगे। लेखक राजा के भक्त विभाग में पहुंचे तो पता चला कि साहब बंसी बजाने गए हैं। कब तक लौटेंगे पता नहीं। लेखक निराश नहीं होते। उन्होंने विभाग में ही कलम जमा करा दी और कहा कि हमारा विरोध हो गया। विभाग का किरानी जो अंतिम बार आठवीं में स्कूल गया था, उसने कलम से विरोध की यह तकनीक पहली बार देखी थी तो हंसने लगा। उसको हंसता देख लेखक और कलाकार आहत हो गए। आहत होना साहित्यकारों का जन्मसिद्ध अधिकार है। इससे उन्हें कोई रोक नहीं सकता। उनके आहत होते ही कलाकारों ने कूची वापस कर दी। फिल्म वालों ने कैमरे लाकर पटक दिए। एक वैज्ञानिक भी भटकता हुआ आया और अपनी सूक्ष्मदर्शी यंत्र रखकर चला गया। भक्तों ने जाकर देखा कि नीरो साहब क्या कर रहे हैं, तो वे आंखें बंद करके पद्मासन का अभ्यास कर रहे थे। योगी आदमी थे। भक्तों ने तंग करना उचित नहीं समझा। इंतजार करते रहे। नीरो जी जब तक बंसी बजा रहे थे, तब तक देश को अधिवक्ता और प्रवक्ता चला रहे थे। वही नीरो जी को देश के महत्वपूर्ण मुद्दों पर सलाह दे दिया करते थे।

नीरोजी दिनभर बंसी बजाकर शाम को फेसबुक और ट्विटर पर अपने मन की बात लिखा करते थे। संसार भर की खबर लिया करते थे। उन्होंने अपने मंत्रियों को बुलाकर एक दिन कहा-

'मैं सोच रहा हूं कि बुद्धिजीवियों को बुलाकर बात कर लूं। उनकी समस्या क्या है, समझने की कोशिश कर लूं। यदि वे कह रहे हैं कि हमारे राज्य में सहनशीलता की कमी है तो कहां है? कहां से आएगी ? इन बातों के लिए एक बार बात करनी चाहिए।'

मंत्री मुस्कराने लगे। एक ने अदब से झुककर कहा-

'हुजूर! आप संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र के सबसे अधिक मतों से चुने गए राजा हैं। इन तुच्छ बुद्धिजीवियों से बात करके आप इनको सिर पर चढ़ाएंगे। इन्होंने आपके खिलाफ हमेशा आग उगली है। आपके राज्य में जब दंगा हुआ, तो यही लोग जनता को आपके खिलाफ भड़काते

रहे। ये लोग कभी दूसरे राजाओं के खिलाफ इतना नहीं बोले, जितना हुजूर के खिलाफ। आप मजे से बंसी बजाएं। बात तो हम कर लेंगे। ऐसा कर लेंगे कि ससुर याद रखेंगे। सहनशीलता तो इन्हें हम सिखाएंगे ही।'

नीरो जी का मन प्रसन्न हो गया। बंसी बजाने लगे। उन्हें दुनिया की चिंता होती तो दुनिया के दौरे पर चले जाते। उनके मंत्री कहते भी थे– 'हुजूर! आप दुनिया की चिंता करें। देश के लिए तो हम हैं ही। आप बड़े हैं, बड़ी समस्याएं सुलझाएं।'

बुद्धिजीवियों की समस्याओं को सुलझाने के लिए मंत्रिगणों की सलाह पर दो-तीन बयानवीर मैदान में उतारे गए, जिनका काम था मीडिया के सवालों पर उल्टे-सीधे बयान देना, ताकि राज्य का ध्यान लेखकों की ओर से हटकर उनकी ओर आ जाए। हो भी रहा था। सधे हुए बयानवीर थे। आदमी की तुलना कभी कुत्तों से तो कभी सुअरों से करके सुर्खियां बटोर रहे थे।

मजे में थी मीडिया। उनको अपनी इच्छा के मुताबिक बयान मिल जाते थे, जिन्हें दिनभर दिखाकर वे टीआरपी की लूट कर रहे थे। सबका साथ सबका विकास हो ही रहा था कि महंगाई बढ़ने लगी। महंगाई से तो बड़े-बड़े योद्धा चिंतित हो जाते हैं। नीरो जी बंसी बजाते रहे। वही महंगाई जो उनके पहले के राज-राजवाड़ों को निगल गई, नीरो जी की बंसी वादन पर फर्क नहीं डाल सकी। दाल ने काफी लंबी छलांग लगाई। तेल तो बांध तोड़कर बहने लगी। प्याज ने सबकी आंखों में आंसू ला दिए, लेकिन नीरो जी बंसी बजाते रहे। वित्तमंत्री आर्थिक मामलों को छोड़कर राजा के नंबर दो होने की होड़ में कूद चुके थे। कानून मंत्री का काम कानून के अलावा सबकुछ देखना था। कानून तो राज्य सरकारों की जिम्मेवारी होती है। इसमें देखने वाली कोई बात होती नहीं है। उनका अधिक समय इन बातों पर ध्यान देने में जा रहा था कि नीरो जी को बंसी वादन के बाद जो प्रिय है, वह उपस्थिति किया जाए। गृहमंत्री नीरो जी की बंसी के प्रबंध में ही सारा समय दे रहे थे। लिहाजा अंदर की व्यवस्था गड़बड़ थी, जिसकी ओर बुद्धिजीवियों ने ध्यान खींचने की कोशिश की थी। मसलन सारा कैबिनेट नीरो जी की प्रसन्नता के मसाले खोजने में लगा था। सबका ध्यान इस ओर था कि बंसी लगातार बजती रहे।

एक बार महंगाई की अधिक चर्चा से तंग आकर नीरो जी ने मीटिंग बुलाई। उवाचे–

मंत्रीगण! 'हम दाल की महंगाई कम करना चाहते हैं। दाल और तेल महंगा होगा, तो आम आदमी खाएगा क्या?'

राजन्! 'आम आदमी क्या खाएगा, यह तो हम नहीं बता सकते, लेकिन क्या नहीं खाने देंगे। इसकी लिस्ट है हमारे पास। यदि आपकी आज्ञा हो तो जनहित में जारी कर दें।'

'सब कुछ हमसे पूछकर ही करोगे। अपनी अक्ल भी लगा लिया करो। हां, तो हम महंगाई कम करने के उपाय पूछ रहे थे। सरकार यानी कि हम क्या कर सकते हैं?'

'हम इसमें कुछ नहीं कर सकते, राजन! इस वर्ष वर्षा हुई बहुत कम। फसल मारी गई, तो उसमें राजा क्या कर सकता है? खाद्यान्नों के लिए वर्षा जरूरी है। हम वर्षा तो करा नहीं सकते।'

समवेत स्वर में ठहाका गूंजा। मंत्रियों को हंसता-खेलता देखा राजा को विश्वास हो गया कि राज में अमन चैन है। उनका मन फिर बंसी बजाने का होने लगा। मन की उमंगों को राज्यहित में रोककर उन्होंने अगला प्रश्न किया – 'हम कालाबाजारियों और आढ़तियों पर सख्ती कर सकते हैं। उनको रोक सकते हैं।'

हजूर! 'यह काम राज्य का हैं। उसको ही यह काम करने देना चाहिए। नहीं तो एक बार फिर से मीडिया वाले आपको बदनाम करने लगेंगे कि संघीय व्यवस्था को समाप्त किया जा रहा है। महंगाई अपने आप जाएगी। आप चिंता न करें। यदि हो सके तो अपील कर दें। अपील करने से भी बुराइयां खत्म होती हैं। आपने सफाई के लिए लोगों से अपील की। आज देश के किसी भी कोने में एक तिनका नहीं मिलता। यहां तक कि चिड़िया भी घोंसला बनाते समय तिनका नहीं गिराती। आपने अपील की कि गरीब अपने बैंक खाते खुलवा लें, तो लोगों ने खुलवा लिए केवल धन की प्रतीक्षा में हैं, जो उसमें डालना है। आप पर लोगों का भरोसा है। आपने जिस काले धन को वापस लाने की बात की थी, लोग आज भी उसकी बाट जोह रहे हैं। आपने अपील की कि लोग अपनी गैस सब्सिडी छोड़ दें, लोगों ने छोड़ दी। आप धन्य हैं महाराज। आप बंसी बजाइए।'

महान तो हम हैं। महंगाई के खिलाफ कुछ न कुछ तो करना ही होगा। चलो ठीक है, हम महंगाई पर मन की बात करेंगे। किसानों से अपील करेंगे कि अधिक से अधिक प्याज, दाल और सरसो की खेती करें। देशहित में खेती करें। वर्षा नहीं हुई तो नहीं हुई। वर्षा से बड़ा है देश। डर इस बात का है कि चुनावों में कहीं हमारे विरोधियों ने इसे ही मुद्दा बना लिया तो... । नहीं स्वामी! हम चुनावों में यह मुद्दा हर्गिज नहीं बनने देंगे। मुद्दा तो हम विरोधियों को देंगे। हम जिस चीज पर चाहेंगे, बहस उसी पर होगी। आप कहें तो हम धर्म-कर्म पर बहस को ले जाएं।

सब काम हमसे पूछ कर ही करोगे। अपनी अक्ल भी लगा लिया करो। हम धार्मिक व्यक्ति हैं। धर्म पर बहस होगी, तो पाप कटेंगे। सांसारिक आवागमन से मुक्ति मिलेगी। एक मंत्री अपेक्षाकृत युवा होने के कारण गलत बात कह बैठा– 'कहीं सत्ता में आवागमन से मुक्ति मिल गई तो... ।' नीरो जी त्यारियां चढ़ गईं। साफ लग रहा था कि युवा मंत्री का विभाग इस परिवर्त्तन में जाएगा। उन्होंने अपना गुस्सा पीकर हरिओम कहा और बोले– 'यह एक आजमया गया नुस्खा है। कभी विफल नहीं होता। माहौल बनाओ कि सारी बहस महंगाई की बजाय धर्म पर होने लगे।' समवेत स्वर में सभी मंत्रियों ने कहा– जो आज्ञा स्वामी! नीरो जी बंसी बजाने चले गए।

शशिकांत सिंह 'शशि'
जवाहर नवोदय विद्यालय शंकरनगर
नांदेड़ (महाराष्ट्र) मो. 7387311701

सहज-सरल, आध्यात्मिक अलख जगाने वाली संत महात्मा भूरीबाई

चुप चुप में छूप छूप रही, झग झग करती जोत।
सत सत आनंद उमड़ती, भूरि ब्रह्म की श्रोत।।
चुप ही साधन है, चुप ही साध्य है और चुप में चुप ही समा जाता है, चुप समझार समझ है। अगर समझते हो, समझना चाहते हो तो
बस एक ही बात समझने योग्य है- 'चुप'
समझे चुप हो जाए और समझे कि चुप हुए।
कुछ और करना नहीं है, चुप समझारी समझ है।
चुप साधन, चुप साध्य, चुप मा चुप्प समाय।
चुप समझिया री समझ है, समझे चुप हो जाए।।

अद्‌भुत महिला थी। यूं कुछ प्रसिद्ध महिलाएं हैं भारत में, जैसे आनंदमयी, मगर भूरिबाई का कोई मुकाबला नहीं। प्रसिद्धि एक बात है, अनुभव दूसरी बात है। अद्वैत वेदान्त का सिद्धान्त देश में बहुमान्य होने पर भी जन साधारण के लिए उसको गहराई से समझना और तद्नुसार आचरण करना कठिन होता हैं। भूरीबाई से संपर्क में विद्वान और ज्ञानमार्ग का अनुसरण करने वालों का नियमित आना जाना बना रहता था। ऐसे लोगों के लिए बाई रामचरित्र मानस एवं श्रीमद् भागवत गीता, महाभारत आदि ग्रन्थों का नियमित पाठ चलवाते रहते थे और पाठ, भजन और कीर्तन भी नित्य कराते थे। अंत समय तक यह क्रम निरन्तर चलता रहा था।

मेवाड़ सदियो से भक्ति और शक्ति की भूमि रही है। बुद्ध पुरुष, महात्मा, साधु सन्त, योगी, महापुरुष इस धरा पर रहे है। चाहे कैसा भी युग रहा हो, परमात्मा की कृपादृष्टि से संत लोग यहां जन्म लेते आए हैं और समाज को अध्यात्म का बोध कराते रहे हैं।

संसार वैसे तो मोह माया का जाल है और एक साधारण इंसान इसमें उलझा रहता है, वो खुद नश्वर है, मगर जड़तत्व को पाने में रह जाता है। उसे पता नहीं चलता, उसके जीवन का उद्देश्य क्या है? वो पुरूषार्थ भी करता है, तो धन और साधन को प्राप्त करने के लिए जो क्षणभंगुर है, मगर जो बुद्ध पुरुष है, वो इसके विपरीत चैतन्य हो, भवसागर पार करने के लिए साधना करते हैं, वो संत है।

सन्त का अर्थ ही सज्जनता से, शुद्धता से जो मन वचन कर्म से शुद्ध है। वास्तव में संत ऐसे व्यक्ति होते हैं, जिनका अहं अत्यल्प होता है, क्योंकि वे स्वयं में विद्यमान ईश्वर को अनुभव करते हैं तथा अन्यों में विद्यमान ईश्वरीय तत्व को देखते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने भी कहा है कि संत वह है, जिसने षट विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, ईर्ष्या आदि) पर विजय प्राप्त कर ली हो। जो निष्पाप और निष्काम हो, सांसारिक वैभव से विरक्त इच्छा रहित और नियोगी हो, सभी प्राणियों में प्रेम भाव रखता हो श्रद्धा, क्षमा, दया, विरक्ति, विवेक आदि का पुंज हो, जो तत्व ज्ञान से परमात्मा की अनुभूति कर लेता है, वो सच्चा संत है। मीरा बाई के बाद अगर मेवाड़ में किसी महिला संत का नाम लिया जाता है, तो वो भूरी बाई है। आज हम **माटी का लाल** में विभूति रूप में मेवाड़ की महात्मा संत भूरी बाई के बारे में बात करते हैं।

भूरी बाई का जन्म लावासरदारगढ़ में वर्तमान के ज़िला राजसमन्द में संवत् 1949 (सन् 1892) को सुथार जाति के अत्यंत साधारण परिवार में पिता रूपा सुथार और माता केसर बाई के घर पर हुआ। पिता अत्यंत काष्ठकला के कुशल कारीगर थे तथा बडे ही धर्मात्मा, बुद्धिमान व सात्विक प्रवृति के होने से समाज में व ठिकाने में प्रतिष्ठावान् थे।

माता पिता दोनों धार्मिक प्रवृत्ति के होने से व नीति नियम और संस्कार, व्रत उपासना का वातावरण घर में रहा। भूरीबाई ईश्वर भक्त और पुण्यात्मा थी। दयालु इतने थे कि एक दिन उनके मकान में एक चोर घूस आया व घर के लोगों के जाग जाने से उसे खाली हाथ भागना पड़ा, जिसका भी रंज उन्हें हुआ और कहा कि भरे घर में से बेचारा योंही खाली हाथ चला गया। सीढ़ियों पर रखं हुए कुछ बर्तन ही ले जाता, तो उसके काम ही आते।

भूरीबाई बचपन से ही दयालु और धर्मप्रिय थी। संवत् 1956 के अकाल में पास पड़ोस के बच्चे जो भूखे होते उनको घर ले जाकर खाना खिला देते थे और मवेशियों के साथ बहुत ही दया और स्नेह का बर्ताव रखते थे। आपका यह स्वभाव आजीवन रहा। तेरह वर्ष की उम्र में ही भूरीबाई का विवाह नाथद्वारा के एक सम्पन्न चित्रकार फतहलाल सुथार के साथ हुआ था, परन्तु विवाह के दो-तीन साल बाद ही उनको को श्वांस का रोग हो गया था, जो बहुत इलाज कराने पर भी बढ़ता ही गया। पति की बीमारी असाध्य प्रतीत होने से बाई का चित अत्यंत खिन्न रहने लगा। पति के स्वर्गवास के समय बाई की आयु मात्र 26 वर्ष की रही थी। इन्हीं दिनों में नाथद्वारा में आए हुए एक युवा योगाभ्यासी संयासी से बाई ने प्राणायाम करना सिख लिया।

बाई की साधना का एक प्रसंग यह भी रहा कि भगवत प्राप्ति के लिए नित्य करीब दो घंटे चुपचाप 'रूदन' करते थे। इसका कारण बाई ने बाद में यह बताया कि उन दिनों साधन की सफलता अर्थात भगवत प्राप्ति का कोई मार्ग स्पष्ट न होने का भयंकर दुख था। इसीलिए अपने आप रोना आता था। यमनियम आदि का पूरा पालन करते हुए योगाभ्यास करते रहने से बाई के ध्यानमग्न रहने का समय बढ़ने लगा। वे लगातार दो-दो दिन तक समाधिस्थ रहने लगे। बाई को सन् 1928 के आसपास आत्मज्ञान की अनुभूति हुई। इससे उनके ज्ञान और वैराग्य की ख्याति प्रकाशमयी होने लगी।

बाई की उदारता और दानशीलता बचपन से लेकर अंत तक बराबर बनी रहीं। पति के समृद्ध घर की अधिकांश वस्तुएं जरूरतमंद लोगों को देकर घर को साफकर दिया। पति के अंतिम दिनों में बाई ने उनसे पूछा कि आपका शरीर तो अब रहने की आशा नहीं दिखती है, सो आपका शरीर जाने के बाद मुझे क्या करना चाहिए, सो बता दीजिए। उनके पति फतहलाल जी भूरीबाई की सेवा से और उनकी त्यागवृति से अत्यंत प्रसन्न थे।

उन्होंने कहा तुम साधु हो जाना। उनका आशीर्वाद ऐसा फलदायक हुआ कि यद्यपि बाई ने घर छोड़कर जाने का मार्ग नहीं अपनाया, पर उनका त्याग, वैराग्य, और तपस्या अच्छे महात्माओं के लिए भी उदाहरण स्वरूप बन गई।

ओशो ने भूरीबाई के लिए कहा- उसका प्रेम अद्भुत था। अपने ढंग का था, अनूठा था। उसे लौटना नहीं पड़ेगा, जगत में, वह सदा के लिए गयी। 'चुप मा चुप्प समाय' वह समा गई। सरिता सागर में समा गई। कुछ उसने किया नहीं, बस चुप रही और उसके घर जो भी चला जाता, उनकी सेवा करती। किसी की भी सेवा करती! और चुपचाप, मौन।

यद्यपि बाई मुंह से बहुत कम बोलते थे, उनका सारा जीवन ही उपदेश स्वरूप था। वे ब्रह्मलीन होने से विभु अर्थात् व्यापक हो गए और उनका प्रेम व आशीर्वाद भी उतना भी व्यापक हो गया।

बीमारी से पति का निधन होने के बाद भूरी बाई का गृहस्थ जीवन बिखर गया, जिससे उनकी आस्था प्रभु भक्ति में धीरे धीरे फिर से बढ़ने लगी और घर पर रोजमर्रा के दैनिक कार्य करते हुए बस राम में रम जाना, जगत भ्रम है, मिथ्या है, ये बात भूरीबाई को समझ आ गई, वो इतनी पढ़ी लिखी नहीं थी। उसने पोथी से ज्यादा अनुराग को महत्व दिया। कबीर ने कहा भी-

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया ना कोई।
ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।।

ये ढाई अक्षर जो दुनिया को आसानी से समझ नहीं आता, मगर भूरी बाई समझ गई। हर जीव आत्मा से प्रेम करना ही भक्ति है। परमात्माए हर जीव आत्मा में निवास करता है। अद्वैत का भाव रखना सभी में एक तत्व है, सभी में परमात्मा का अंश विद्यमान है। हमारे प्राचीन शास्त्रों में नवधा भक्ति का महत्व बताया गया। श्रवण, कीर्त, स्मरण, पादसेवन, अर्चन वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन इसमें आत्मनिवेदन को भक्ति की सबसे उत्तम अवस्था माना जाता है। अपने आपको भगवान के चरणों में सदा के लिए समर्पण कर देना और कुछ भी अपनी स्वतंत्र सत्ता न रखना। भक्ति का ये रहस्य ही व ये बोध ही बाई को भक्ति के चरम पर ले गया।

जिसको लिखा, पढ़ा या बोला नहीं जा सकता है, यही मुक्ति कारक है। यही सार शब्द साधक की आत्मा को कालातीत कर स्थायी मुक्ति प्रदान करने की आध्यात्मिक शक्ति रखता है। सद्गुरु की कृपा से जब सार शब्द प्रकट होता है, तो यह मन माया की सीमा से खींच कर पार ले जाता है।

भूरी बाई से सत्संग में आने वाले भक्तों ने आग्रह किया। आप भी अपने आध्यात्मिक अनुभवों की कोई पोथी लिखिए– जो संसार के काम आए, तो उन्होनें तुरंत कॉफी मंगवाई और काली स्याही बर्तन में गोल प्रथम पृष्ठ को छोड़ सारे सफेद पृष्ठो को स्याही से काला पोत दिया और प्रथम पृष्ठ पर राम लिख दिया। तात्पर्य ये कि राम नाम के सत्य से प्रकाश पुंज है, बाकी सब अधेंरा है। काली पोथी की घटना से बाई ने परमतत्व का सार भक्तों को बहुत सरल तरीके से बताया।

आचार्य रजनीश भी बाई की ईश्वर भक्ति से बहुत प्रभावित थे। उन्होनें भूरी बाई की तुलना मीरा बाई, राबिया, सहजो बाई जैसी संतो से की। बावजी चतुरसिंह ने भी भूरी बाई में परमतत्व के बोध का अनुभव कर लिया। किसी अन्य संत महात्मा ने भूरी बाई को अलख नाम से सम्बोधित किया, जो उनके नाम के साथ अमर हो गया। अलख का अर्थ ही यही है कि ईश्वर का स्मरण करते रहना और दूसरो को भी उसे स्मरण करने की प्रेरणा देना। यानि अलख जगाना, जैसा नाम, वैसा कर्म करते हुए बाई ईश्वर आराधना में लीन हो एक निर्मल सरिता बनकर भव सागर तक पहुंची और नश्वर संसार छोड़ 3 मई 1979 ई. वैसाख शुक्ल 7 संवत् 2036 को सदा के लिए परमतत्व में विलीन हो गए।

वैसे संत भूरी बाई की महिमा से संसार परिचय नहीं है। बहुत कम लोग ही संत भूरी बाई के इस महान परिचय से वाकिफ है, मगर जो अनन्य भक्त शिष्य है। उन्होंने लावासरदारगढ़, नाथद्वारा और उदयपुर में अलख आश्रम बना रखे हैं। वहां आज भी सत्संग की अलख जगती है।

उदयपुर में संत भूरी बाई ट्रस्ट द्वारा अलख नयन हॉस्पिटल बना रखा है, जहां गरीबो, निर्धन, असहाय रोगियों के आंखों से संबंधित ईलाज मुफ्त होता है और आंखो के ऑपरेशन हर गांव, शहर में शिविर लगाकर निशुल्क सेवा भाव से किए जाते हैं।

भूरी बाई जागृत संत : मुरारी बापू

नाथद्वारा की एक अत्यंत जागृत संत गहन साधना की सहज साधक जिसे अगल बगल वाले भी कम ही जानते, प्रसिद्धि विलग बात है और शुद्धि विलग बात है। मुरारी बापू ने संत भूरी बाई की अनुभूतियों को नमन किया, आदर व्यक्त किया। जागृत संत के चरणों की कृपा जिसे चमत्कार नाम दिया जाता है, वो साधकों की साधना का रहस्य उद्घाटित करता है। पारसमणि किसी ने नहीं देखी यह, श्रद्धा जगत का सूत्र है। परिवर्तन ही स्वर्णिम जीवन का रहस्य, पारसमणि नहीं देखी, पर बुद्ध पुरूषों की सत्संग से लोहा सोना होते हुए दिखता ही है। भूरीबाई पारस थी।

यह सौभाग्य है कि मेवाड़ की महान संत महात्मा भूरी बाई के आध्यात्मिक जीवन पर कलम चला कर समाज में अलख जगाने का प्रभु ने आशिर्वाद स्वरूप जो अवसर मिला, जिसे प्रसाद स्वरूप स्वीकार करते हुए महान विभूति संत भूरी बाई को श्रद्धाभाव से कोटि – कोटि नमन करते हैं।

-: प्रस्तुति :-

अरविन्द मुखिया
अधिस्वीकृत स्वतंत्र पत्रकार
छोटा गोपालपुरा, नाथद्वारा

सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली
मो. 94146-21730

तीखी मिर्ची

ऑफ द रिकॉर्ड :
जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिएं-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

प्राइवेट स्कूल के फायदे

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

आज चौराहे पर सारे पड़ोसी किसी खास मुद्दे पर सलाह कर रहे थे, मगर सभी की एक सहमति नहीं बन पा रही थी। पांडे ने मुझे देखते ही बुला लिया था, तो मैं भी भरी गर्मी में घर आया और हाथ-मुंह धोते ही चौपाल पर आ गया। इन दिनों अप्रेल में ही गर्मी सातवें आसमान पर पहुंच चुकी है। तनख्वाह समय पर मिल नहीं रही है। घर पर पंखे, कूलर, फ्रीज की रिपेयरिंग का बोझ सिर पर और ऊपर से बच्चों के प्राइवेट स्कूलों में एडमिशन का चक्कर। पांडे, मिश्रा और माथुर सभी इसी विषय पर बतिया रहे थे।

मिश्रा अपने बच्चे के अच्छे कॅरियर के लिए प्राइवेट स्कूल की सलाह पूछ रहा था। वहीं पांडे अपने कॉन्वेंट स्कूल में इस बार भी फेल हो गए बच्चे के आगे के कॅरियर बनाने में सलाह करने लगा। पिछली बार की महंगी फीस व महंगे खर्चे के बाद प्रिंसीपल ने जिम्मेदारी ली थी कि इस बार हम फीस बढ़ा रहे हैं और महंगी फेकल्टी लगा रहे हैं। आपका बच्चा निश्चित रूप से पास हो जाएगा, मगर 'ढाक के तीन पात' हाल बोर्ड एक्जाम में फिर फेल हो गया। अब तक छोटी क्लासों में हमेशा टॉप करने वाला बच्चा बोर्ड एक्जाम आते ही फेल हो गया। समझ में ये नहीं आ रहा है कि अब तक क्या स्कूल वाले बगैर पढ़ाई के ही बच्चों को नम्बर दे रहे थे। तभी माथुर ने कहा- प्राइवेट स्कूलों की पढ़ाई सिर्फ दिखावा रह गई। सरकारी स्कूलों के डिग्रीधारी व अनुभवी शिक्षकों की तुलना में सस्ते अयोग्य शिक्षक होने के बावजूद प्राइवेट स्कूलों की महंगी फीस, कमीशनखोरी की किताबें व युनिफॉर्म, ऊपर से आए दिन इवेंट के नाम पर जेब कटाई दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है।

यह बातें सुनकर पांडे ने कहा कि मेरा तो अब बच्चे को पढ़ाने से ही मन उठ गया है। कोई न कोई नौकरी देखनी पड़ेगी। यह सुनकर मिश्रा ने बगल के खम्भे के पास पान थुंक कर कहा- पांडेजी कैसी बातें करते हो। जब पढ़े लिखे कई युवा बेरोजगार घुम रहे हैं। तो ऐसे में आपके फेल बच्चे को कौन नौकरी देगा? और अभी से यदि वह नाकामयाब हो गया, तो जिन्दगीभर किसी लायक नहीं रहेगा।

यह सारी बातें सुनकर मैंने कहा कि अब यदि पांडे के बच्चे के लिए अच्छा कोई कॅरियर है, तो वह सिर्फ यही है कि मोहल्ले में ही एक प्राइवेट स्कूल खोल दिया जाए। यदि हम आस पास की सारी प्राइवेट स्कूलों को देखे, तो ज्यादातर इसी तरह के संचालक प्राइवेट स्कूल चला रहे हैं।

यह बात सुनकर पांडे का मुरझाया चेहरा खिल उठा। उसके मन की उलझन अब सुलझ चुकी थी और मन ही मन में प्राइवेट स्कूल के फायदे के बारे में सोचने लगा। अन्य साथियों ने भी एक स्वर में अपनी सहमति जताई। प्राइवेट स्कूल की शिक्षण व्यवस्था को लेकर कोसने वाले सभी लोग अब प्राइवेट स्कूल के फायदों को लेकर चर्चा करने लगे।

करें मंथन, लिखे अपने विचार

हर अंक में नवीनता, मौलिकता ही जयवर्द्धन का खास प्रयास रहा है। इसी कड़ी में मई 2019 के अंक से मंथन नामक यह कॉलम शुरू किया गया है। इसके लिए सोशल मीडिया (Facebook Page : liverajsamand) पर एक विशेष विषय पर प्रश्न रखा जाएगा। उक्त विषय पर निर्धारित समयावधि में अधिकतम 150 शब्दों में लेख हमें ईमेल या वाट्सएप नम्बर पर भेज सकते हैं। इसके जरिये न सिर्फ जनता को जागरुक करने का ध्येय है, बल्कि जनहित के मुद्दों व सामाजिक कार्यों के प्रति आमजन को एकजुट करना भी है। सोशल मीडिया पर एक विषय का प्रश्न जारी होने के बाद तय समयावधि में लिखकर भेजें :- ई मेल jaivardhanpatrika@gmail.com व वाट्सएप मोबाइल : 94142-39648। फिर चुनिंदा लेख, विचार व मंथन को जयवर्द्धन पत्रिका के इस कॉलम में प्रकाशित किया जाएगा।

सवाल

अपनी शिक्षा प्रणाली के दम पर कभी विश्वगुरू रहे भारत देश में वर्तमान समय में निजी शिक्षा संस्थान महज व्यापार के साधन बन कर रह गए हैं?

भारत की शिक्षा

व्यापार बन गई है, आज की शिक्षा।
शिक्षा क्या है नहीं जाने, चला रहे हैं शिक्षा।
पंजीकृत ठेकेदारों के हाथ शिक्षा को बेच दिया है।
गुणवत्ता विहीन शिक्षा निजी हाथों बेच दिया है।।
गरीबों को जरूरत है, अच्छी शिक्षा की।
बुनियाद कमजोर कर रहे हैं शिक्षा कमी।
निजी हाथों चली गई विश्वगुरु भारत की शिक्षा।
विज्ञापन- व्यापार बनकर रह गई भारत की शिक्षा।।
रोजगारपरक हो हमारे भारत की शिक्षा।
नैतिक विकास का माध्यम बनें भारत की शिक्षा।
शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक विकास करें शिक्षा।
जल, जंगल-जीवों का संरक्षण करें शिक्षा।।
अनिवार्य नि:शुल्क शिक्षा व्यवस्था करें सरकार।
पाठ्यसामग्री और पोशाक की भी है दरकार।
अच्छे गुणों को सभी करें स्वीकार।
शत प्रतिशत नामांकन से करें उपकार।

डॉ. भगवानलाल बंशीवाल
बागोल, नाथद्वारा

अभिभावक भी जिम्मेदार

मंथन, भारतीय संस्कृति में शिक्षा का महत्व वैदिक काल से है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति आत्मनिर्भर बनाती थी और साथ ही राष्ट्र रक्षा हेतु सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी। युद्ध कौशल कला यानी आज के युग अनुसार सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी और पारिवारिक मूल्य भी सीखाएं जाते थे। समय बदला और वर्तमान अर्थ युग में भौतिकवाद हावी होने से दिखावा जिसे यूं कहे (स्टेण्डर) मानसिकता पर हावी हो गया। अभिभावक चाहते हैं कि हमारा बच्चा अच्छे और नामी स्कूल में पढ़े भले शिक्षा का स्तर जो हो। मध्यम और उच्च वर्ग के लोगों की मानसिकता यही कि हमारे बच्चे प्राइवेट स्कूल में पढ़े सरकारी स्कूल में तो गरीबों के बच्चे पढ़ते हैं। अभिभावको की इसी संकीर्ण सोच से आज प्राइवेट स्कूलों को शिक्षा सेवा की जगह व्यापार बना कर रख दिया है। वरना सरकारी स्कूल में अच्छी पढ़ाई होती है। कुछ सरकार ने भी सरकारी स्कूल के अध्यापकों को अतिरिक्त जिम्मेदारी सौंप दी है। शिक्षक बच्चों को पढ़ाने के अलावा भी अन्य कार्य करने को मजबूर है। इसी कारण सरकारी स्कूलों का ढर्रा बिगड़ गया है। प्राइवेट स्कूल आज मनमानी करें तो भी अभिभावक अपने बच्चो के भविष्य के लिए उसी का सहारा लेता है। मेरे विचार में सरकार को देश की शिक्षा प्रणाली में सुधार करना चाहिए। तभी सरकारी शिक्षा का स्तर और उसकी गुणवत्ता में बदलाव संभव है।

सूर्य प्रकाश दीक्षित, कांकरोली

दिखावे की होड़ में

दिखावे की होड़ में, प्रतिस्पर्धा में दौड़ के
संस्कारों को छोड़ के, औकात के बन्धन तोड़ के
हां पाई पाई को जोड़ के, रुख पश्चिम की ओर मोड़ के
अब बच्चों को पढ़ाना है,
स्कूली व्यापार जानते हैं, पर आप हम सभी पिछड़ न जाए।
इसलिए सबको ये व्यापार बढ़ाना है।

मुकेश शर्मा, भाजपा युवा मोर्चा राजसमंद

शिक्षा का व्यापारीकरण

निजी विद्यालय- महाविद्यालय के व्यापारीकरण के लिए समाज जिम्मेदार है। सभी गांव- शहर में सरकारी विद्यालय है, पर सरकार के साथ-साथ हम स्वयं भी उनके प्रति उदासीन है। विद्यालय प्रबंध समिति अगर नियमित विद्यालय, स्टाफ की उपस्थिति, शिक्षा की गुणवत्ता, भौतिक संसाधनों के रखरखाव, निगरानी रखें, जनप्रतिनिधियों की जवाबदेही तय करें, तो सरकारी विद्यालय और महाविद्यालय से क्वालीफाईड शिक्षक, निजी विद्यालय- महाविद्यालय में नहीं मिलेंगे। दूसरी तरफमहंगी फीस और चमक-दमक वाले विद्यालय व महाविद्यालय में अपने बच्चे को पढ़ाना भी आजकल सामाजिक रूतबा का प्रतीक माना जाने लगा है। इस मानसिकता का निजी विद्यालय व महाविद्यालय भरपूर फायदा उठा रहे हैं।

प्रकाश रंजन, बिहार

सरकार ही जिम्मेदार

शिक्षा प्रणाली में विश्वगुरु कहलाने वाले भारत की शिक्षा आर्थिक बीमारी की जकड़ में आ चुकी है। आजाद भारत की सरकारों के ढुलमुल रवैये के कारण ही निजी शिक्षण संस्थान आज बेलगाम हो रहे हैं। सख्त नियम है, मगर सरकार का अधिकारियों पर बस नहीं चलता, न ही प्रशासन का सही उपयोग सरकार कर पा रही है। जनता की गाड़ी कमाई का पैसा निजी स्कूलों द्वारा लुटा जा रहा है। स्कूली प्रोस्पेक्ट्स व आई कार्ड से लेकर वर्दी, किताबें, मैसेज, पिकनिक और बस्ते हर चीज में कमीशन का धंधा फल फूल रहा है। अभिभावक खुद को स्कूल प्रशासन के आगे असहाय पा रहा है। सरकार जल्द से जल्द एक नियामक आयोग का गठन करें, जिसके द्वारा निजी स्कूलों की लूट पर लगाम लगाई जा सके। मुनाफा कमाना शिक्षण संस्थानों का औचित्य नहीं होना चाहिए, परंतु आज निजी स्कूलों में कुछ दलालों की वजह से सारा माहौल खराब हो रहा है। शिक्षा को कारोबार समझने वाले चंद लोगों की सोच की वजह से सारा सिस्टम गड़बड़ा रहा है। पारदर्शी सरकार का वादा कर सत्ता में आने वाली सरकारे जवाब दें, आखिर निजी स्कूलों की खुलेआम लूट पर वह चुप क्यूं है? आजाद भारत में इतनी सरकारे आई है, परन्तु अभी तक किसी सरकार द्वारा कौनसी बड़ी कार्यवाही अब तक अमल में लाई गई है? निजी स्कूलों द्वारा लिए जा रहे अतिरिक्त शुल्क पर सरकार का क्या पक्ष है? राजनीतिज्ञों और नौकरशाहों ने अपनी काली कमाई को सफेद करने के लिए अनेक शिक्षा संस्थान खोल रखे हैं। उदाहरण एक अच्छा इंजीनियरिंग मैनेजमेंट या होटल मैनेजमेंट इंस्टिट्यूट खोलने की लागत 30 से 300 करोड़ रुपये के बीच आती है और खोलने के कुछ समय बाद ही उससे 10 से 15 प्रतिशत मुनाफा मिलने लगता है। दुनिया के श्रेष्ठ दो सौ विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में से एक भी भारतीय नहीं है। जिन आईआईटी और आईआईएम पर हम इतराते हैं वे भी इस सूची में स्थान बनाने में विफल रहे हैं। ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों से अब तक 65 नोबेल पुरस्कार प्राप्त हस्तियां निकल चुकी हैं, जबकि हमारे यहां अभी खाता खुलने का इंतजार है। क्या थी मेरे भारत की शिक्षा प्रणाली और आज क्या हो गई अत्यंत चिंतनीय विषय है।

भेरूलाल जाट, सार्दुल खेड़ा, राजसमंद

माता पिता की गलती

अभिभावक की गलती है। हमारा विचार अच्छे विद्यालय का नहीं रहता, अपितु ये रहता है कि पड़ोसी के बच्चो की फीस 35000 है, तो हम अपने बच्चो को 40000 फीस वाली स्कूल में दाखिल करवाते हैं। वहां शिक्षा और संस्कार का क्या हाल है, ये नहीं देखते हैं।

हितेंद्रसिंह सोलंकी, टाडावाड़ा सोलंकीयान

सरकारी स्कूलों का स्तर सुधारें

आज हम देखते हैं गली-मोहल्ले में छोटे छोटे मकानों में प्राइवेट स्कूल खुल गए हैं। सरकारी नियमों को ताक में रखकर जिम्मेदार अधिकारियों को खुश करके अपना कारोबार चला रहे हैं। वहीं बड़ी बड़ी सरकारी इमारतों में अनुभवी शिक्षक होने के बावजूद गिने चुने बच्चे पढ़ रहे हैं। पोषाहार, स्कूल व अन्य गैर शैक्षिक कार्यों में शिक्षकों को लगाने से भी सरकारी स्कूलों की शिक्षण व्यवस्था प्रभावित हो रही है।

- वीएस चौहान, कांकरोली

राजस्थान पत्रिका,
दैनिक भास्कर के साथ सभी
अखबारों में विज्ञापन
प्रकाशित कराने का एकमात्र स्थान
शक्ति
एडवरटाइजिंग

सभी प्रकार की खेलकूद सामग्री मिलने का राजसमंद में एकमात्र स्थान

शक्ति स्पोर्ट्स

शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद)
94142-39648, 94144-73275

Goal Setting Is Important

If you want to live a happy life, tie it to a goal, not to people or things :
- Albert Einstein

A life without goal is simply like a pendulum which keeps on moving all the time and doesn't

reach anywhere. It is must to know where to go and why to go. You start your journey from

home but have no certain place to go, you will reach somewhere the path had taken you and not where you wanted to go.

Setting goals is something that important for learners as their daily diet to improve health.

Educators and parents must play an important role in helping them setting short term and longterm academic and non-academic goals. Setting goal means knowing what you want to achieve, what to concentrate on and where to improve.

Goal setting gives learners long-term vision and short-term motivation. This process should be started at early age to enable them set their own targets and work towards achieving the same.

SETTING GOALS AND CHASING THEM.

Learners with set goals, develop numerous abilities, such as leadership skills, team building, team work, accountability, and overcoming challenges, which are all vital in their lives.

Having goals makes learners aware of their actions, efforts, and even their time management skills. Setting goals obligates them to take action, regardless of the obstacles that may be in place. As such, it can encourage students to develop critical thinking skills, new problem solving techniques, and a better understanding of how to overcome issues.

It helps them to be accountable for their action or step they take and so for the outcome.

Why goal setting is important –

1. Goal gives you focus
2. Goal keeps you motivated
3. Goal allows you to measure progress
4. Goal keeps you undistracted
5. Goal helps you to overcome procrastination
6. Goal boosts up your confidence
7. Goal helps you improve your performance

Steps for effective goal setting

1. Define your goals clearly
2. Be accurate
3. Set realistic & measurable goals
4. Set priorities
5. Set deadlines

Gurudev Rabindranath Tagore said, "Reach high, or stars lie hidden in you. Dream deep, for every dream precedes the goal."

Manisha Lashkari
Principal Smart Study International School Nathdwara

जरा सोचिए! क्या हम एक जागरूक नागरिक की भूमिका अदा कर रहे हैं?

वर्तमान दौर चुनावों का दौर चल रहा है और इस दौर में सरकारों से किसी भी प्रकार के प्रश्न करने से बेहतर होगा कि कुछ प्रश्न हम स्वयं से करें, सर्वप्रथम देश के सच्चे और जागरूक नागरिक होने के नाते हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि हम लोकतंत्र के सम्मान में अपने अमूल्य मत का प्रयोग करें और वह भी गुप्त रूप से। हम यहीं मात खा जाते हैं कि मतदान करने से पूर्व व मतदान के वक्त हम इस बहस में पड़ जाते हैं कि हमें किसको अपना मत समर्थित करना है या हमनें किसे अपना मत दिया है। इससे अन्य व्यक्तियों, जिन्हें अपने मत का प्रयोग करना हैं। वे असमंजस में आ जाते हैं और स्वविवेक का उपयोग नहीं कर पाते है।

हर व्यक्ति को अपने उम्मीद्वार को पूर्ण रूप से परखने का पूरा- पूरा अधिकार होता है और वो परखता भी है। उन क्षणों में हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि हम भी व्यक्ति विशेष के निजी विवेक में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप ना करें। बल्कि उसे और समस्त समाज को यह सन्देश दें कि लोकतंत्र के सम्मान में अपने मत का प्रयोग करें।

निर्वाचन आयोग तो लोकतंत्र के इस महापर्व को ऐतिहासिक बनाने में अपना सम्पूर्ण योगदान देता है, लेकिन क्या हम इसमें अपना थोड़ा सा भी योगदान देते हैं ? जरा सोचिए ! हम तो बस इसी बात का प्रचार करते हैं कि किस प्रत्याशी को वोट दें। क्यों ये मत किसे देना है। इसका निर्णय हम जनता के स्वविवेक पर छोड़ दें। तो आइए हम संकल्प लें, सौ प्रतिशत मतदान का व हम अपनी कर्मठता का परिचय प्रस्तुत करें और विरासत रुपी लोकतंत्र का संरक्षण करें।

हमारी जागरूकता का परिचय हम इस रूप में भी दें कि हम किसी प्रत्याशी की कर्मठता और निकृष्टता के विषय में बहस करके अपनी अज्ञानता का परिचय न दें। हमें हमारे जीवन के सत्य का आभास होना चाहिए।

इस बारे में हमें स्वयं से कुछ प्रश्न करने चाहिए। किसी प्रत्याशी ने क्या किया है और क्या नहीं। हम समय से यह प्रश्न करें कि क्या हमनें अपने क्षेत्र में किसी भी प्रकार सामाजिक सद्भावना का सन्देश दिया है ? क्या हमने कभी अपने क्षेत्र में पर्यावरण का ख्याल रखा है ? क्या हमने कभी गन्दगी नहीं फैलाई है ? या स्वच्छता का सन्देश दिया है ? क्या हमने सरकारी योजनाओं का सम्मान

किया है ? क्या हमनें एक जागरूक नागरिक होने के नाते कभी अपने जनप्रतिनिधि को उसकी कर्तव्यपरायणता का आभास कराया है ? हम क्यों सरकारी योजनाओं को ऐसे नजरिए से देखते हैं कि वो कोई जनकल्याणकारी योजना न होकर के कोई खैरात हो ? क्यों हम अपनी धरोहरों का अपमान करने पर आमादा है ? ऐसे और भी कई सारे प्रश्न हैं, जो हमें स्वयं से पूछनें चाहिए।

अगर इन सारे प्रश्नों का उत्तर 'ना' है, तो हमें कोई हक नहीं कि हम किसी के ऊपर सवाल- जवाब करें। अगर कोई जनप्रतिनिधि अपनी निकृष्टता का परिचय देता है, तो इसके लिए जिम्मेदार हम स्वयं है।

हम क्यों उनके कार्यकाल के पूरा होने का इंतजार करते हैं ? अगर हमने उन्हें चुनकर किसी पद पर स्थापित किया है, तो हमारी पूरी जिम्मेदारी बनती है कि हम समय- समय पर उनके वादों से उनको अवगत करवाए। तभी हम एक सच्चे और जागरूक नागरिक बनने का सामर्थ्य रख पाएंगे।

आइए, हम एक सच्चे और जागरूक नागरिक बनने की दिशा में कदम बढ़ाएं और उपरोक्त सभी कार्य करें।

विजय पालीवाल
काव्य गोष्ठी मंच
राजसमंद

सांड की रैली और नामांकन

कुछ दिन पहले एक सांड़ सपा की रैली में घुसा था। यकीन मानिए अगर वो मोदी जी की रैली में घुसा होता, तो चुनाव में ना सिर्फ टिकट का प्रबल दावेदार होता, बल्कि गठबंधन के प्रत्याशी के रूप मे चुनाव का सबसे बड़ा मुद्दा होता और सुप्रीम कोर्ट अगर इजाजत दे देता तो आज वह बनारस से 102वां उम्मीदवार होता। और तो और यकीन मानिए समाजवादी पार्टी या महागठबंधन उसे टिकट भी दे देती, क्योंकि तब सांड़ को इसलिए दलित साबित किया जाता कि उसे मोदी जी से मिलने नहीं दिया गया। या फिर सांड को पिछड़ी जाति का बताकर उसे बाबा साहेब अम्बेडकर का हितैषी और दबा कुचला बताया जाता। भले वो रैली में पांच दस लोगों को दबा के कुचल देता। उसे बकायदा केजरीवाल जी देशभक्त साबित करते।

क्योंकि वो मोदी के खिलाफ है, तभी रैली में पहुंचा। उसे चारागाह की घास सुखी मिली, इसलिए उसने चारगाह छोड़कर बनारस से नामांकन का फैसला किया और नेताओं की रैली का रुख किया। हद है भाई! साधो एक बात तो है खनन घोटाले और मूर्ति घोटाले के बाद चोर चोर मौसेरे भाई वाली कहावत अब चोर चोर बुआ भतीजा में बदल चुकी है। यही बात उस सांड को नागवार गुजरी और बबुआ के रैली में जा पहुंचा।

सांड से एक इंटरव्यू में पत्रकारों ने पूछा कि उसने विरोध के लिए अखिलेश की रैली को ही क्यों चुना, तो सांड ने अपनी बात रखते हुआ कहा कि हमारी संख्या जिस तरह यूपी में बढ़ी है। उसके लिए पिछली सपा सरकार ही जिम्मेदार है। क्योंकि पूर्ववर्ती स्वपरिवार, विकासपुरूष अखिलेश ने गायो को तो कटवाया, पर हमारी बिरादरी को सड़कों पर छोड़ते गए। अब हमने मिलकर फैसला लिया है कि हम अखिलेश के हर रैली में विरोध प्रदर्शन करेंगे। पर तभी इंटरव्यू के बीच में कन्हइया कुमार को सांड के कानों में ये कहते सुना गया कि यूपी में अखिलेश के सीएम बनते ही तेरे टुकड़े होंगे हजार। तुरंत सांड ने केजरीवाल की तरह यू टर्न लिया और सांड़ ने कहा उसके पास पार्टी की च्वाइस है और वह कांग्रेस के साथ गठबंधन करेगी देश में।

एक तरफ कलकत्ता के लोग उस सांड को अल्पसंख्यक मुस्लिम बोलकर उसके पक्ष में खड़े होते, तो दूसरी तरफ हैदराबादी ओवैशी समूह उसे देश की क्रांति बता जाती। सांड डांस करता तो न्यूज चैनलों पर रबिश कुमार हेडलाइन्स बनाते की सांड का डांस भाजपा वालो की साजिश है। सांड ने डांस कर कर नोटबन्दी को बताया भ्रष्टाचार।

पर यदि सांड भाजपा जॉइन करता तो फिर सोशल मीडिया पर सांड की हिस्ट्री निकलकर वायरल हो रही होती। जैसे कि सांड इंटरमीडिएट फेल है। सांड मुस्लिम विरोधी है। सांड आरएसएस से जुड़ा है इति इति।

तभी एक प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई जाती, रणदीप सुरजेवाला जेब से खुद लिखा एक खर्रा निकालते और कहते कि 1947 के विभाजन में उस सांड के दादा के परदादा के दादा गफ्फूर मियां के साथ भारत आए थे। इसलिए सांड की विचारधारा कांग्रेसी है। फिर सांड को टिकट देने वाले नेता तथा आत्मघोषित निष्पक्ष पत्रकार कहते वाराणसी में खुद नंदी आए हैं। वहां एक आम सांड देश बदलने को लड़ रहा है।

सांड को भूख लगती तो वह चारागाह का मसला उठाता। पूरा बनारस गिल्टी फील कर रहा। विपक्ष कहता 2014 में हमने जिसे चुना उसने एक भी चारागाह नहीं बनवाया। इसलिए हम सांड को सपोर्ट करेंगे। सांड जुलूस से नामांकन दाखिल करता नामांकन में गठबंधन के कई दिग्गज उपस्थित होते। खुले ढाले में सांड के ठीक बगल में केजरीवाल बाए ममता दीदी उनके बगल में राहुल जी और उनके बगल में सीताराम येचुरी और मायावती। यह पूरा दृश्य ठीक वैसे ही होता जैसे सपा का नया उम्मीदवार मोदी जी के खिलाफ धूमधाम से वाराणसी में नामांकन करने जा रहा हो। सांड सर्जिकल स्ट्राईक पर विरोध करता तो जुलूस में से कपिल सिब्बल सहमति में सिंग हिलाते। सांड नोटबन्दी को नुकसान देय बताता तो मनमोहनसिंह भीड़ में से जयकारा लगाते जय नंदी महाराज। सांड यदि जीएसटी को लूट बोलता तो सोनिया भांगड़ा करती जुलूस के आगे ।

और अंत में जब सांड कहता की हमारा गठबंधन यूपी में भाजपा पर भारी पड़ रहा, तब तुरन्त अखिलेश झुक कर मायावती के पैर छु लेते और कहते कि भले बापू आपसे हार गया। बुआ पर ये यूपी के विकास की जीत होगी। अब आप बताइए आप इस देश के प्रबुद्ध वोटर है। आप क्या अपने मत का प्रयोग इन सांड महोदय के पक्ष में करते या आप देश के लोकतंत्र को चुनते, जिसमें 56 इंच का सीना ठोकने की ताकत है और जो देशहित में ऐसे फैसले लेने की हिम्मत रखता है, जिससे उसकी राजनीतिक साख भले दांव पर लग जाए, पर देश नहीं झुकने पाए वाली बात हो।

पंकज कुमार मिश्रा
जौनपुरी 8808113709

मैं नशा हूं

अंधकार के मार्ग से पूरित,
वश में करना मेरा काम
न मेरा कोई रंग
न मेरा कोई रूप
अदृश्य सा हूं
पाकर मुझे चाहे सुकून मिलता
पर बाधा को मैं और बढ़ाता
लज्जा का मैं ऐसा कलंक
यश को क्षीण कर देता
झूठ बोलना मेरा काम नहीं
कई उदाहरण तुमको दिखाता
घृणा का बना देता शिकार
दासता ये कुछ ऐसी है मेरी
फल सबको एक ही देता
बस असफला, असफलता, असफलता
तनाव की दवा न समझो
मैं कोई औषधि नहीं
आश्चर्य न करो
मैं नशा हूं।

योगेन्द्र जीनगर
राजसमंद

ऐसा है मेरा इश्क

सुनसान रातों के अंधेरे में नहीं
जो भरी सभा में तुझे खोजे
ऐसा है मेरा इश्क

सिर्फ तेरे सुख का साथी नहीं
दुख में जो हमदर्द बन घूमें
ऐसा है मेरा इश्क

चांद तारे जमीन पे लाने की बात करें वो नहीं
जलते अंगारों पे नंगे पैर जो तेरे साथ चले
ऐसा है मेरा इश्क़

सिर्फ़ तेरे सुख से जिसे मतलब नहीं
तेरे दर्द में जो हमदर्द बन जाए
ऐसा है मेरा इश्क

रातों में सिर्फ़ तेरी बाहों तक सीमित नहीं
तपती धूप में तेरे साथ कदम से
कदम मिलाने की ताकत रखें
ऐसा है मेरा इश्क़

सावन का मौसम जिसकी याद ले
आये वो नहीं, बेवक्त जो तेरी परवाह करे
ऐसा है मेरा इश्क़

आलीशान महल और गाड़ियों का मोहताज नहीं
एक छोटी झोपड़ी और चाय की टपरी पर
चुस्की लेते हर लम्हा जीये
ऐसा है मेरा इश्क़

बॉलीवुड की किसी मुवी की तरह रोमांटिक तो नहीं
पर हां मेरी हर कविताओं का विषय बन जाये
ऐसा है मेरा इश्क़

किसी शायर की ग़ज़ल तो नहीं
पर हां तेरे अहसास को किताबों के
इन पन्नों में कैद कर जाए
ऐसा है मेरा इश्क़

ना नगीना, ना कोई हीरा, ना सोना, ना कोई चांदी
तेरी मौजूदगी ही जिसका साथ श्रृंगार बन जाए
ऐसा है मेरा इश्क़

सिर्फ़ सुबह का वो सूरज नहीं जो तेरा दिन रोशन कर
जाए, चमकती जुगनुओं की वो रोशनी है जो
तेरे पर छाये अंधेरे को निगल जाए
ऐसा है मेरा इश्क़

मन्दिर का दीया है तो दरगाह की चादर
धरम जिसका सिर्फ़ मोहब्बत है
ऐसा है मेरा इश्क़

जिस्म से नहीं बंधी है जिसकी डोर,
है उसका तेरी रूह से नाता, खामोश तेरे लब रहे
मगर फिर भी सब मुझे समझ आता

तेरी चाहत की चोखट से जो शुरू हुआ
मेरी कब्र पर ही दम तोड़ेगा
इश्क़ है ये जनाब
जमाने की हर मोहर से लड़ेगा

जिसका ना दिन, ना रात गुलाम है
मोहब्बत ही जिसका ईमान है
दर पर लिखा जा चुका जिसका नाम है
मेरी ज़िंदगी का सबसे बड़ा हासिल इनाम है
ऐसा है मेरा इश्क़

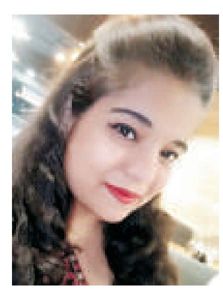

फातिमा फोटोवाला
उदयपुर (राजस्थान)

सादर अनुरोध

जिन पाठकों की वार्षिक सदस्यता पूर्ण हो गई है, वे कृपया 200 रुपए शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली में जमा करवाएं- 94142-39648

झील में जीवन

मैं नोचौकी जाता
टहलता, नहाता, तैरता
स्वर्ग सा आनंद
मिलता झील पर
तभी नजर गिरती
झील के जल पर
रोज कम होता जाता
एक इंच पानी

झील के किनारे हमेशा
आती एक मीन तैरती
किनारे पर बनी सीढ़ी पर
जमी हुई कायी पर
निशान बना जाती
यही क्रम दोहराती
बार बार हर बार
शायद वह इसलिए आती

किनारे पर देखने
कितना शेष है
झील में
जल या जीवन

मनीष नंदवाना
राजनगर,
9460370192

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती..

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	40	200 रुपए
3 वर्ष	36	720	220	500 रुपए

जयवर्द्धन 3 वर्ष की बुकिंग से 220 रुपए की महाबचत

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,

जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

नियम और शर्ते :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुन: निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

संबंध की अहमियत

एक बार एक शिष्य महात्मा के साथ जंगल में भ्रमण कर रहा था। जंगल में अनेक वृक्ष और पशु पक्षी थे। एक वृक्ष पर दो चिड़िया बैठी थी, जिसे शिष्य एक टक देख रहा था। वहां से वह थोड़ा आगे जाता है और एक वृक्ष पर दो बंदर देखा है, जो साथ में बैठे हुए हैं। पुन: वह आगे बढ़ता है और एक वृक्ष की डाल पर देखता है कि दो गिलहरियां एक दूसरे के पीछे दौड़ रही है, मानो क्रीड़ा कर रही हो। शिष्य उन्हें देखकर बहुत चिंतित था। महात्मा ने शिष्य से पूछा शिष्य इतने चिंतित क्यों हो ? शिष्य ने उत्तर दिया- है गुरुदेव ! मैंने इतने सारे पशु पक्षी देखे पर किसी को अकेला नहीं पाया। किसी न किसी के साथ कोई साथी अवश्य है। ऐसा क्यों ? महात्मा ने शिष्य से कहा बताओ- तुम मेरे साथ भ्रमण क्यों कर रहे हो ? तुम अकेले भी कर सकते थे। ये सुनकर शिष्य अपना जवाब पा चुका था। महात्मा ने फिर समझाया- शिष्य इसका कारण है मित्रता, अपनापन और व्यवहार यही किसी के संबंध की वह कड़ी है, जो सभी को एक दूसरे से जोड़े रखती है। इसी का कारण है जो हम और वो पशु-पक्षी साथ है। हमें सदा इस व्यवहार को बनाए रखना चाहिए। शिक्षा संबंध की कड़ी मित्रता, अपनापन और व्यवहार है। हमें इसे बनाए रखना चाहिए।

योगेन्द्र जीनगर, राजसमंद

शिक्षा और विद्या के अभिनव प्रयोग

जब भी नवाचार की बात की जाती है, तो सर्वाधिक प्रयोग जहां किए जाते रहे हैं। उस स्थान का नाम है विद्यालय। ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक 10 वर्ष में एक पीढ़ी बदल जाती है। यह पीढ़ी का बदलाव पारिवारिक नहीं, अपितु शैक्षणिक होता है। परिवार के हिसाब से मानें तो पीढ़ी 25 वर्ष में बदलेगी, किंतु 10 वर्ष में बदलाव का अर्थ इतना ही है कि जो कुछ 10 वर्ष पूर्व सीखा अथवा सिखाया जा रहा था। उसके तरीके बदल जाने चाहिए। हम 'चरैवेति-चरैवेति' के सिद्धांत की अनुपालना करते हैं। यही सतत परिवर्तन हमारे क्रियाकलापों अथवा अभ्यास में भी दिखाई देने चाहिए।

विगत लगभग 30 वर्षों से संचालित गायत्री विद्या मन्दिर किशोरनगर में अनेकों प्रयोग किए गए और उनके सफल परिणाम भी श्रेष्ठ नागरिकों के रूप में सामने हैं। गत वर्ष इस विद्यालय के संचालन की जिम्मेदारी युवाओं की टीम 'दीया राजस्थान' को दी गई। विगत एक वर्ष में विद्यार्थी एवं शिक्षकों की सोच में एक बड़ा परिवर्तन देखा गया। शिक्षा के साथ गतिविधियों के माध्यम से सीखने और बढ़ने को क्रम सभी ने अपनाया और सराहा। यही कारण रहा कि अधिकांश अभिभावक विद्यालय के साथ सहयोग देते हुए कदम से कदम मिलाकर चलते दिखाई दिए।

शैक्षणिक उन्नयन, सकारात्मक सोच एवं क्रियाशील व्यक्तित्व ये तीन आधार हैं आगे बढने के। निस्संदेह इस अवधारणा को धरातल पर उतरते देखना अत्यंत मुश्किल प्रतीत होता है, किंतु विगत एक ही वर्ष में चारों स्तंभों (विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षक एवं प्रबंध समिति) ने एक परिवार की भांति एक दूसरे का सहयोग करते हुए सकारात्मक सोच को अपनाया। यही कारण है कि परिणाम भी दिखाई देने लगे। आगामी वर्ष में जहां शैक्षणिक उन्नयन के लिए विद्यालय कटिबद्ध है। वहीं गतिविधियों के माध्यम से सहकारिता एवं सकारात्मकता के साथ क्रियाशील व्यक्तित्व गढ़ना ही हमारी प्राथमिकता है ।

जिन बिंदुओं को विकसित करना है, वे हैं -

- प्रतिभाओं को गढने के लिए छात्रवृत्ति
- श्रेष्ठ पुस्तकालय
- कम्प्यूटर प्रशिक्षण
- छात्र- अध्यापक, अभिभावक मंडल
- सफल व्यक्तियों से मार्गदर्शन

आदि प्रयोग अधिक तेजी से विद्यालय में दिखाई देंगे।

शिक्षा से मानसिक विकास एवं विद्या से भावनात्मक विकास के प्रयोग एक साथ हो तो कोई कारण नहीं कि विद्यार्थी संतुलित न दिखाई दे। 'समत्वं योग उच्यते' जीवन में संतुलन रहें। यही हमारे कार्य करने का आधार है, यही प्रेरणा है, यही प्रगति का सूत्र भी है और यही आगे बढने का मार्ग भी।

डॉ. विवेक विजय
अध्यक्ष प्रबंध समिति
प्रोफेसर जोधपुर

क्रिनाव

भारत उत्सवधर्मी राष्ट्र है। यहां कोई ऐसा महीना नहीं गुजरता, जब उत्सव न मनाए जाएं, लेकिन इस समय दो पर्व एक साथ मनाए जा रहे हैं। एक फटाफट पर्व और दूसरा जोड़- तोड़ उत्सव। जनता के बोरिंग जीवन में अल्पकाल के लिए ही सही उत्साह के संचारक उत्सव होते हैं। जनता सब जानती है, इसलिए उसे यह पता है कि किसी उत्सव को मनाने में कोई कोताही नहीं बरतनी चाहिए। उत्सव कुछ के लिए खुशी का साधन हैं और कुछ के लिए अपनी गरीबी, लाचारी के पुनर्स्मरण का माध्यम हैं। भारत इतना खुशमिजाज देश है। फिर भी वर्ल्ड हैप्पीनेस इंडेक्स में उसे 133वां स्थान मिला। यह सोचनीय विषय है। इसका सबसे बड़ा कारण दूसरे के सुख से दु:खित होने की आदत हो सकती है। फलां पड़ोसी आज गाड़ी ले आया तो और पड़ोसियों का रक्तचाप पेट्रोल के दामों की तरह उछलने लगता है। अमुक पड़ोसी का पूत नौकरी पा गया तो पूरे मोहल्ले के बेरोजगार युवाओं को उपदेश सुनने की अस्थायी नौकरी मिल जाती है।

अपने देश में पत्रा और पत्रा वालों को सामने तो सम्मान के झाड़ में चढ़ा दिया जाता है, किंतु पीठ पीछे गालियों का लजीज प्रसाद बड़ी तन्मयता से समर्पित किया जाता है। भारतीय शंकालु प्रवृत्ति के होते हैं, जिसके कारण उन्हें हर कार्य असफलता पहले नजर आती है और इसी चक्कर में वे मूहुर्त जानने के लिए पत्रालुओं की शरण ग्रहण करने से नहीं चूकते हैं। असल में ग्रहों के अनुकूलन या ग्रहों के सुखद संयोग होता है।

आप लोग सोच रहे होंगे कि मैं भी क्या मूहुर्त- सूहुर्त की नीरस की बातें करके आपके दिमाग का दही करने पर तुल गया हूं, परंतु ऐसे गंभीर आरोप को मुझ पर थोपने से पहले थोड़ा विचार कीजिए कि भला मुफ्त ज्ञान देने से कौन बाज आएगा? मैं अपनी मौलिक खोज से आपको एक ऐसे मूहुर्त के बारे में बताने जा रहा हूं, जिसका उल्लेख विश्व के किसी भी ज्योतिष में नहीं मिलता है। जिस तरह खगोल वैज्ञानिक घोषणा करते हैं कि अमुक खगोलीय घटना इतने दिनों के बाद घट रही है। वैसे ही भारतीय समाज में सन् 2009 के बाद से हर पांच साल पश्चात एक ऐसा मुहूर्त आता है, जिसमें बच्चा बच्चा वाकिफ है। इस मुहूर्त में आईपीएल और चुनाव साथ साथ होते हैं। 2009 में पहली बार ऐसा अभूतपूर्व संयोग हुआ कि आईपीएल तथा लोकसभा के चुनाव टकरा गए, चूंकि दोनों में तापमान गर्म हो जाता है।

अत: देश में गर्माहट की अधिकता को देखते हुए आईपीएल को दक्षिण अफ्रीका ट्रांसफर कर दिया था। इसके पीछे एक कारण यह था चुनाव तो ट्रांसफर कर सकते। क्योंकि नेताओं और बुद्धि के बीच छत्तीस का आंकड़ा है और विदेशियों को बुद्धू बनाना थोड़ा कठिन होता। विदेशों में चुनाव तो शिक्षा, रोजगार, तकनीकी संवर्धन जैसे गैरजरूरी मुद्दों पर आधारित होते हैं। वहां अली- बली, कच्छे के रंग जैसे जरूरी विषयों की ओर कोई ध्यान नहीं देता है।

भारतीय इतिहास में दूसरा ऐसा संयोग 2014 में बना, जब फिर से आईपीएल को यूएई में करवाया गया था। तीसरा सुखद संयोग इस वर्ष फिर से बन रहा है, लेकिन थोड़े बदलाव के साथ। अबकी बार आईपीएल और चुनाव दोनों यहीं संपन्न हो रहे हैं। यह कुछ उसी तरह है, जैसे कुछ चंद्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण देश में दिखाई देते हैं और कुछ नहीं। चुनावों की सरगर्मी, आईपीएल की जोशीली गर्मी और ऊपर से मौसमी गर्मी है, जिसके 3डी रिफ्लेक्शन से जनता चमचमा रही है। दिन में राजनेताओं की तथ्यहीन बातों तथा चुटकियों से आनन्दित होती है। रात में चौकों- छक्कों की फुहारों से सराबोर होती है। जनता की तो मौजे ही मौजे है। भारत में सबसे ज्यादा भारी भरकम काम टाइमपास करना है। क्योंकि अकामों के कुछ न कुछ काम चाहिए ही चाहिए। टाइम पास करने के लिए भी लोग क्या- क्या नहीं करते हैं। कोई मूंगफली फोड़ता है, तो कोई टीवी के सामने अंगद के पैर जैसे जम जाता है।

मुझे तो आईपीएल और चुनाव कुछ मामलों में समान और कुछ में लगते हैं। दोनों में टीमें या पार्टियां होती हैं। दोनों में स्टार होते हैं। दोनों के खिलाड़ी इस बात से अनभिज्ञ रहते हैं कि अगली बार उनकी नाव किस घाट पर लगेगी। दोनों में चीयरलीडर्स अहम हैं चुनावी लीडर (चमचे) जाम टकराकर चीयर करते हैं और क्रिकेट वाली चीयर के जरिए लीड करती हैं। दोनों में पैसों की दिलकश नुमाइश की जाती है। आईपीएल और चुनाव दोनों में जनता दर्शक बनकर रह जाती है। एक में टिकट खरीदकर उल्लू बनती है और दूसरे में टिकट खरीदने वाले उल्लू बनाते हैं। दोनों में सट्टेबाजी का बाजार इस तरह गर्म हो जाता है कि सट्टेबाजों की निकल पड़ती है। मोबाइल कम्पनियों की चांदी हो जाती है। क्योंकि पड़ोसी आटा सहर्ष दे देगा, पर डाटा देने से साफ मना कर देगा। डाटा देकर घाटा नहीं सह सकता। क्योंकि फिर कैसे मैच देखेगा और अपनी अजीज पार्टी के सोशल मीडिया में कसीदे कैसे पोस्ट करेगा?

आईपीएल तो हर साल आता है, पर चुनाव के साथ मिलकर जो क्रिनाव नामक मजेदार योग बनता है, उसका लुत्फ लीजिए और मतदान कीजिए।

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट (उत्तरप्रदेश) 86041-12963

मेवाड़ी हॉकी जादूगर श्री श्यामलाल वर्मा

मुझे याद आ रहा है, आज से लगभग 40 वर्ष पूर्व उदयपुर हॉकी फेडरेशन के उस समारोह में उस समय के प्रमुख सचिव श्री सिराज साहब के कहे गए, वो वाक्य जो श्री श्यामजी-किशनजी की जोड़ी को एक उत्कृष्ट आयाम दे गए। सिराज सा. ने कहा हमारे पड़ोसी गांव के ये दोनों जवान खिलाड़ी अनेकानेक अभावों के चलते इतने अच्छे खिलाड़ी बन गए, पर हम हजारों खर्च करके भी अब तक एक भी ऐसा श्यामु या किशन जैसा खिलाड़ी तैयार नहीं कर पाए।

अगर मेवाड़ के नवरत्नों की सूची बनाई जाए, तो खेल क्षेत्र में श्री श्यामलालजी वर्मा का नाम निश्चित रूप से उस सूची में खेल की उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए सबसे ऊपर रखा जाएगा।

16 नवम्बर 1932 को राजसमंद पाल पर कांकरोली में श्री नारायण लाल जी ब्रजवासी ठाकुर के घर में माता रतनदेवी की कोख से जन्म ले श्री श्यामलालजी वर्मा (ठाकुर) ने जब बचपन की अठखेलियां छोड़ किशोरावस्था में प्रवेश किया, तभी से खेल प्रतिभा का विकास आपमें दिखने लग गया था। गली मोहल्लों में कई तरह के पारम्परिक खेल में मशगुल रहने लगे, लेकिन सन् 1945 का साल आपके जीवन में एक नई सुबह लेकर आया, कांकरोली द्वारकाधीश मन्दिर के तत्कालिक महाराज ने द्वारकेश हॉकी टुर्नामेन्ट का आयोजन किया, जिसमें राजस्थान (राजपुताना) के कई शहरों की टीमों ने भाग लिया। कांकरोली के द्वारकेश हॉकी टीम में श्री श्यामजी का प्रदर्शन तारीफे काबिल रहा। कांकरोली के कई नामी गिरामी खिलाड़ियों के साथ उस टुर्नामेन्ट में श्री श्यामजी को गोल पर गोल करते देख दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए।

फिर उसके बाद तो सिलसिला चल निकला। नाथद्वारा के श्रीकृष्णा टूर्नामेन्ट, उदयपुर के भोपाल पेन्ट्री क्लब आदि आदि अनेकानेक टूर्नामेन्ट में आपके उत्कृष्ट प्रदर्शन से हर तरफ श्यामु-किशन का नाम होने लगा। दर्शक आपके खेल के दिवाने होने लगे। आपके खेल से प्रभावित हो उदयपुर की मोहता क्लब ने श्री श्यामु-किशन की इस जोड़ी को अपनी क्लब से खेलने की पेशकस की। जिसे यहां के बुजुर्ग खिलाड़ियों के राय मशवरे के बाद आपने स्वीकार किया और मोहता क्लब की और से ये जोड़ी राजस्थान के अनेकानेक शहरों में अपने खेल के हुनर का जलवा बिखरने लगी। उस समय गुलाबपुरा में होने वाले टुर्नामेन्ट में एक अनोखी परम्परा थी। उस टुर्नामेन्ट में जीतने वाली टीम पर हजारों लाखों की बोलियां लगाई जाती थी, उस टुर्नामेन्ट में भी इस जोड़ी ने अमिट छाप छोड़ी। मोहता क्लब के तत्वावधान में जीत दिलाई और चारों और इस जोड़ी की वाहवाही होने लगी। जयपुर के टूर्नामेन्ट में जीत हासिल कर जब वे वापस आ रहे थे तब किशनगढ़ के तात्कालिक महाराज ने इन्हें अपने यहां पुरी टीम के साथ आतिथ्य के रूप में रोक लिया और एक फ्रेंडली मैच किशनगढ़ में आयोजित किया, जिसमें इस जोड़ी का जलवा देख महाराज श्री इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने यहां किशनगढ़ में रखने का प्रस्ताव रख दिया, पर जो होना था वही हुआ।

वे कांकरोली द्वारकाधीश की छत्रछाया में फिर लौट आए और सन् 1947-48 में श्री शंभूदादा इन्हें नम्बरदार स्कूल, उदयपुर ले गए। वहां अपने खेल का सफर चलाते रहे। फिर सन् 1951 में इन दोनों ही खिलाड़ियों को शारीरिक शिक्षक पर राजकीय नौकरी पर लगा दिया गया और ये बालकों में खेल का विकास करने लग गए। सन् 1957 केन्द्रीय मंत्री अमृतकौर के निर्देश पर इन्हें हॉकी कॉच की ट्रेनिंग के लिए पटियाला भेजा गया, जहां हॉकी के जादूगर श्री ध्यानचन्द से आपका प्रथम परिचय हुआ और आपका खेल देखकर ध्यानचन्दजी ने आपको राजस्थान में हॉकी के कोच के साथ-साथ पूरा पूरा आशिर्वाद दिया। आपके खेल को सराहा, जो एक यादगार की धरोहर की तरह है। फिर सन् 1962 में बीकानेर में एक राष्ट्रीय टूर्नामेन्ट में एक अनोखा रिकार्ड कायम किया। एक मैच में 14 पेनाल्टी कॉर्नर में से 12 गोल कर खूब वाहवाही लूटी। राजकीय सेवा से निवृत होने के बाद आप आध्यात्मिक की ओर आकर्षित हो गए। एकान्त में रामायण का पाठ, अखाड़े पे जाकर हनुमान चालीसा आदि का पाठ किया करते और समाज में सद्भावना का संदेश देते। 17 अक्टूबर 1992 को आपने अपनी देह त्यागी और स्वर्ग सिधार गए।

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी

होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा, मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।

दिलीप जैन

मो. 9214384205 9602997715

जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

वरदीचन्द सोनी कोठा वाले

बड़ी-बड़ी मूंछे चश्में से झांकती बड़ी-बड़ी आंखे, लहराती गर्राती उनकी आवाज आज भी याद है। मुंह में केसरी छाप बीड़ी का धुंआ उगलते उनके नाक के फन के

और थरथराते होंठ मुझे आज भी याद है और हां मेरे इस छोटे से कस्बे के यादगार सिनेमा हाउस सुन्दर टॉकीज में जहां हर दूसरे-तीसरे दिन फिल्म बदल जाया करती थी। सैकण्ड क्लास की वो कॉर्नर सीट मुझे आज भी याद है, जिस पर वरदीचन्दजी हर फिल्म देखने आया करते थे और मैं भी फिल्म का शौकीन सवा दो आने वाली थर्ड क्लास में से पीछे मुड़ मुड़ कर उनको देखा करता था। छोगाबा की नमकीन के भी वे बड़े शौकीन थे। खौमचे पर खड़े हो हर नमकीन को चखना और भाव तोल कर लेकर खड़े खड़े खाना उनका शौक था।

मेरे पिताजी एक रुपया कलदार देकर कहते बेटा वरदीचन्दजी के कोठे से चाय और शक्कर ले आना वो दिन मेरे लिए बड़ी खुशी का दिन हुआ करता था। मैं कोठे पर जा एक सेर शक्कर 10 आने की और एक पुतली छाप ब्रुकबॉण्ड चाय का पुड़ा 5 आने में उनके कोठे से लाया करता था। बचता था एक आना बस मजा यहीं से शुरू होता था, वे पीतल की इकन्नी निकाल कर हाथ आगे बढ़ाते में उनसे बड़ी ही नम्रता के साथ कहता सेठजी इकन्नी के खुल्ले पैसे या ढींगले हो तो दो ना। वे तीखी नजरों से चश्में से झांकते, मुस्कराते और कभी इकन्नी के चार पैसे तो कभी एक-दो पैसे के चार ढींगले भी दे दिया करते थे। वे खुल्ले पैसे मेरे लिए 10-12 दिनों के लिए काफी हुआ करते थे। कभी एक ढींगले की मिठी गोलियां तो कभी पैसे दो पैसे की लाल चौकी से श्री देवीलाल की दुकान से सेव मरमरियां, कभी और कुछ और कभी और कुछ लेकर मजे ही मजे थे।

कांकरोली के रेती मोहल्ले में श्रीलालजी के व्यावसायिक परिवार में 6 दिसम्बर 1905 को माता श्री वरजु बाई की कोख से आपका जन्म हुआ। साधारण शिक्षा के बाद ही आपने पिता श्रीलालजी के व्यवसाय में हाथ बंटाना प्रारम्भ कर दिया और पुरी निष्ठा और लगन के साथ आपने आपके व्यापार को आगे बढ़ाया। ईमानदारी, विश्वसनीयता और उत्तम क्वालिटी ही आपके व्यापार की पहचान बन गई थी। किशोरावस्था में ही आपका विवाह अंजा बाई के साथ हो गया और सुख भरी घर गृहस्थी चलती रही। समाज में भी आपका पूरा पूरा सम्मान था। समाज का कोई भी काम आपके सहयोग के बिना नहीं हुआ करता था। गांव में आपकी छवि एक मानवतावादी अच्छे नेक दिल इंसान की थी। ऐसे अनेकानेक किस्से आज भी पुराने लोगों से सुनने को मिल जाएंगे। जिस घर में शादी हो, मौत-मरण हो या अन्य कोई कार्य, वे हर तरह की मदद और उस व्यक्ति का काम पूरा कर दिया करते थे। हालांकि उनके इस भले काम से कुछ कठिनाईयां भी होती थी, पर वे इसे ज्यादा महत्व नहीं दिया करते थे। खेती बाड़ी का भी उन्हें बड़ा शौक था, खेत पर जाना, गाय-भैसों की सेवा करना, उनकी देखभाल करना वे अच्छा मानते थे। एक सबसे बड़ी विशेषता उनमें ये थी कि वे कोई भी काम अपने हाथ में लेते, तो उसे पूरा करने पर ही दम लिया करते थे। पेचदार पगड़ी और लहरिया पगड़ी बांध घोड़े पर बैठकर वे गावों में उगाई पर जाया करते थे। उन्हें घोड़े पर बैठे देख बच्चे तालियां बजाते, राम राम करते, नमस्ते करते और वे मुस्कराते सरपट चाल से अपने गन्तव्य की ओर निकल जाते। किराने के व्यापार के साथ-साथ तम्बाकू होल सेल व्यवसाय भी करते थे। 16 जुलाई 1962 को आपने अपना शरीर त्याग दिया और इस दुनिया में अपनी यादें छोड़ कर स्वर्ग सिधार गए।

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली

चाहे जिसके वोट पड़े, जीत आपणी ही

बिस्तर में पड़े पलटियां ही खा रहे थे कि सवेरे कॉलबैल क्या बजी, मन मार कर उठना पड़ा। आंखें मिचमिचाते हम बालकनी से नीचे क्या देखते, पांव तले जमीं खिसक गई। लगा सपना तो नहीं, इतने नेताजी नीचे से बोले– आंखें फाड़कर क्या देख रहे हो, तनिक दरवाजा तो खोलो। हम अचकचा गए रोजाना अफसरो, कार्यकर्ताओं से घिरे रहने वाले नेताजी हमारे द्वार।

न लाव न लश्कर। किराए के कुल जमा हमारे दो कमरे। एक किचन और दूसरा बैठक, शयन सब कुछ। अब हमने सो रही श्रीमती को झिंझोड़ा भागवान उठो, बिस्तर हटाओ नेताजी द्वार पर है। इतने में दुशाले में लिपटे नेताजी ने फिर घंटी बजाई। हमने द्वार क्या खोला नेताजी अर्जुन की गांडीव गति अंदर आ धमके। हम कुछ कहते कि वे हांफते हुए बोले दरवाजा बंद करो।

हमतो पहले से ही जानते थे कि नेताजी की आवाज ही अंतिम आदेश है, सो दरवाजा बंद। जब वे थोड़ा सामान्य हुए तो घर में फर्नीचर के नाम पर पड़ा एकमात्र लकड़ी का स्टूल आगे कर बैठने को कहा, पर ये क्या वे तो हमारे साथ ही चटाई पर पसर गए। हमने कहा आपने नाहक तकलीफ क्यों की। आदेश करते, हवेली हाजरी दे आते हजूर।

हम कुछ कहते कि वे बोले जिन्दगी भर लिखता ही रहेगा कि कुछ समझेगा भी। अब हम उनको यह कैसे समझाते कि वे बिना समझे बोल सकते, तो फिर हम लिख क्यों नहीं सकते।

बहरहाल हमारी कौन सुने, समझे। सो हमने पूछ लिया माई बाप आज इस गरीबखाने पर कैसे आना हुआ। वे बोले आज हम मिशन हैकिंग पर है। हमने कहा हम समझें नहीं, वो बोले तुम समझ भी नहीं सकते। हमारी समझ पर सवाल आते ही हम ऊंची आवाज में बोलते कि उनके हाथ के इशारे से हम सहम गए। इस इलाके में नेताजी का इशारा ही गजट नोटिफिकेशन जो ठहरा। पसरे सन्नाटे को तोड़ते ही नेताजी बोले– हमें उसका पता दो। हमने कहा किसका? वो बोले उसी लदंन वाले का। हमने कहा आपका मतलब। वो बोले अरे लिखड़ची। हम मिशन हैकिंग पर है और हमें सुजा का पता चाहिए।

सुजा का नाम सुनते ही हमारे कान खड़े हो गए। पर नेताजी और ना नुकर ना बाबा। बुरी तरह फंसा देख हमने टालने की गरज से कहा खता माफ करें खम्मा घणी इसमें खतरे बहुत है। हमने धीरे से कहा– कहीं पकड़े गए तो। वो बात काट बीच में बोले कलम काण्डी हरि अनंत हरि कथा अंनता...। जब बोफोर्स से राफेल, नोटबंदी से नेटबंदी और टूजी से लेकर व्यापम तक निपट गया, तो क्या सुजा

और सुजा का सौरबा।

गला घट्टी के पटो में फंसता देख हमने फिर दांव खेला। अगर पता चल गया, तो भांडा फूट जाएगा और अपनी रही सही सब गुड़ गोबर। आंखे तरेरते वे फिर बोले कलमची तू लाख टोटके कर ले, वोट कहीं भी पड़े, पर जीत तो अपणी ही होगी।

नेताजी का विश्वास देख हमारा गला सूखने लगा। हमने अटकते हुए कहा नेताजी हैकिंग की सेटिंग संभव नहीं है। पर उनको टस से मस नहीं होता देख हमारी हालत पतली होने लगी, लेकिन वे भंग की तरंग जैसे अपनी बात पर डटे रहे। इतने में श्रीमती जी चाय की प्याली क्या लाई, हमारी जान में जान आ गई। हमने खिसयानी हंसी के साथ चाय की प्याली आगे की। इतने में वे बोले हमें चाय में टरकाओ मत। हमने तो चाय पर चर्चा कर गांव की पगडण्डी से लालकिले की लंका तक लूट ली। अब तो सुजा के पते के साथ ही शकल दिखाना वरना...।

तब से हमारी चाय की प्याली में उठा तूफान अभी थमा नहीं है। सुजा का पता मिल जाए, तो हमें बताना जरूर वरना हमारी वैचारिक सर्जीकल स्ट्राईक तो तय है।

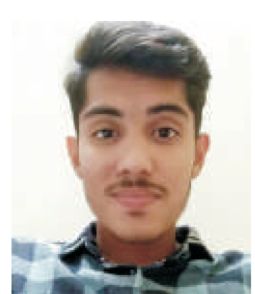

देवाषिश दिनेश श्रीमाली
152अयोध्यापुरी किशोरनगर
राजसमंद (राजस्थान) 313324

हमारे अधिकृत विक्रेता :

राजसमंद :
- महालक्ष्मी किराणा स्टोर : 97999-30985
- देवनारायण किराणा स्टोर : 98298-92504
- एचएस ट्रेडर्स : 96948-16513

सनवाड़ :
श्री नागणेचा किराणा स्टोर : 99280-96170

केलवा :
न्यू बॉम्बे ट्रेडिंग : 77720-08888

आमेट :
श्री देवनारायण ट्रेडर्स : 96024-63254

रिछेड़ :
श्रीनाथ किराणा एवं डेयरी : 99839-96443

चारभुजा :
देवराज किराणा स्टोर : 81075-98399

उदयपुर :
विजेन्द्र ट्रेडिंग कंपनी : 77920-03333

नाथद्वारा :
वंदना ट्रेडिंग कंपनी : 70145-87513

देवगढ़ :
महालक्ष्मी प्रोविजन स्टोर : 96024-50455

सादर अनुरोध

पाठकगणों से अनुरोध है कि ज्यादातर पाठकों के **जयवर्द्धन पत्रिका** की वार्षिक सदस्यता पूरी हो चुकी है। इसीलिए वार्षिक सदस्यता के लिए **जल्द 200 रुपए या तीन वर्ष की सदस्यता के लिए 500 रुपए जमा करवा कर** शक्ति स्पोर्ट्स शास्त्री मार्केट कांकरोली अथवा हमारे प्रतिनिधि से रसीद प्राप्त कर सदस्यता नवीनीकरण करवाएं।

संपर्क : 94142-39648

An ISO -9001:2015

M. 9829445469, 9929495228

शाईन कम्प्यूटर्स

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

SHiNE

C.F.A (Tally)

पूर्ण व्यवसायिक कोर्स

GST/Tally ERP

RS-CIT | Tally पूर्ण व्यवसायिक कोर्स | DCA | PGDCA | PDCA | Spoken English

राजसमन्द का नं. 1 कम्प्यूटर संस्थान

शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469

शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

टाई बांधवा रो टंटो

पाड़ोस में आमजी पामजी रा छोरा छोरी पराइवेट अस्कूलां में भणवा जावै न जणी घर म्हे धणी-लुगाई मुंडे- मुंडे कमावे अर टिफन- बोटल वाली, अस्कूलां में टाबरा ने भणवा न्हीं म्हैले तो आ वात घणा जणा रै आसे नी आवे।

खावता पीवता घर रा आदमी लुगाई होची हमझी हिया मता एक करीन ऐक नुवी पराइवेट अस्कूल में आपणा टाबरां ने भणवा मेल्या। मोटी बिल्डिंग देखी न होचवा लाग्या क आपणो निरणेय गलत कोनी। एडमिसन देवा वाला मास्टराऊं संपर्क हाध्यो। नुवा एडमिसन, बाराई मीना (महीना) री फीस, मोटर किरायो, डायरी, किताबा, कॉपियां, टाई, बेल्ट, मौजा हगला री जोड़ हजारा रिप्या में बैठी।

अबे रोज घरां बारणे ऊं गाड़ी टाबरा ने लेवा आवे अर छोड़ी न जाती रै। पांच हात (सात) दना रे केड़े स्कूल ड्रेस पे कड़ो ध्यान अस्कूल वाला देवा लाग्या। प्रार्थना में हेंग छोरा छोर्‌या ने आदेश भणी न हुणायो। आप सभी प्रतिदिन विद्यालय ड्रेस में आएंगे। टाई, बेल्ट, मोजे, शूज सभी विद्यालय नियमानुसार होने चाहिए। छोरा छोर्‌या रे मारे डरपणी रे वात लागी रे परी। घरे आईन रोवता थका आपाणी माऊं ने वात वताई। माऊ कियो क थां टेन्सन मती लो अर भणाई करो। म्हुं दादा ने बजार मेली न रेडीमेड मंगाई देऊं।

दूजे दन बजार ऊं ड्रेसा आई। माऊ छोरा छोरी ने तैयार कीदा पछे टाई बांधवा रे वास्ते हेलो पाड़ियो। ओ! केशी रा दादा उठ्या कोनी हाल तकां। या टाई थां अणा रे परी बांधो। दादा टाई हाथ में लेई न देख्यो आ म्हने बांधता तो न्हीं आवे। पड़ोस में वणीज अस्कूल रा माड़साब रेवे। वणा रे कने छोरा ने मेलूं जो परी बांधी देई। पछे केशी न गणपत्यो परा हीकैला न बांधता रेई। परबात पेली आपाणी अस्कूल रा माड़साब रे घरे जाईन गणपत्ये हेलो पाड्यो। टाई हाथां में देखी न माड़साब भांपी ग्या क यो टाई बंधावा ने म्हारे कने आयो पणी म्हने टाई बांधता न्हीं आवे। अर्जेन्ट काम रो आलखो (बहानो) लेई न टरकायो, क्लास टीचर बता देंगे।

गणपत्यो फोरा हींदरा जशी टाई ने हींजरतो थको पाछो घरे आयो। न व्ही जा वात केई दीदी। अस्कूल ग्यां पेलो पीरेड लाग्यो अर माड़साब छोरा गणपत्या ने कक्षाऊं बारणे निकाल्यो। जाओ प्रिंसीपल के पास टाई बांधकर क्यो नहीं आए। क्लास मास्टर ने ई टाई बांधता न्हीं आवती वो छूट पलै व्हियो।

छोरा रे आज गजब री परी वीती। अरमण्यो- धरमण्यो प्रिंसीपल रे कमरा में ग्यो न वात वताई। प्रिंसीपल जी बोल्या तुम्हारे पिताजी तो इतने नामी गिरामी है, तुमको टाई बांधना भी नहीं आता? प्रिंसीपल भोलाई- चपलाई न बालक ने फेरी दादो। गणपत्यो हमझी ग्यो या टाई बांधता तो अणी पराइवेट अस्कूल रा धणी धोरी नेई कोईनी आवे। ये तो पया कमावा रे वाते टाई, बेल्ट, कॉपिया, किताबां न जूता वेचे, मोटी दकान मैं। मैं वल आफत मोल लीदी।

डॉ. नगेन्द्र कुमार मेहता
साहित्यकार, भव्यकृपा, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी
नाथद्वारा, जिला राजसमंद 98299-60055

GAYATRI PUBLIC SENIOR SECONDARY SCHOOL, DHOINDA

गायत्री पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल धोइन्दा जिला - राजसमंद

(English & Hindi Medium)

ADMISSION OPEN UKG to XII

SCIENCE — Physics, Chemistry, Biology, Mathematics

COMMERCE — Accounts, Business Studies, Economics, Mathematics

ARTS — English Lit., Hindi Lit., Sanskrit Lit., Geography, Economics, Drawing

Salient Features

- One of The Best Well Disciplined School in District
- Educational Environment
- Sports & Cultural Activities
- Bank & Industry Visit for Commerce Student
- Science Visit to Science City Ahmedabad
- Educational Tour (Jaisalmer)
- E-Learning
- Well Furnished & Ventilated Class Room, Labs & Library
- Excellent Result in Board Classes
- Proficient Faculty & Staff
- Scholarship for Meritorious Students
- Digital Smart Class Concept
- Pure Aqua Water
- 24 Hours Electricity Backup
- Spiritual Prayer
- Conveyance Facility by Luxurious Buses

Hurry Up ! Limited Seats....

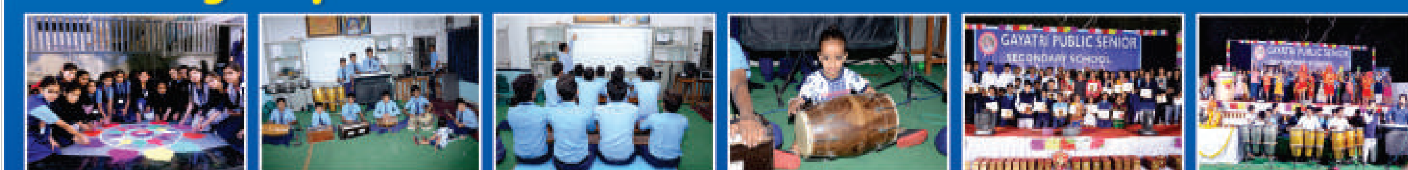

Contact :

Principal 02952-221818

Hitesh Paliwal 9784055000

Girish Paliwal 02952-220818

Harivallabh Paliwal 9314421818

ADMISSION FORMS ARE AVAILABLE IN OFFICE BETWEEN 8.30AM TO 1.30 PM

Tel. : 02952-220818, 221818 | E-mail : gpsdhoinda@gmail.com

25% RTE Admission

जयवर्द्धन

की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में

सम्पर्क : 94142-39648

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर

शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल

राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर

मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी

हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर

राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी

इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर

साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)

अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला

भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

आज ही प्रवेश लें

गर्मी की छुट्टियों में कम्प्यूटर सीखने का सुनहरा मौका

RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

सरकारी नौकरी के लिए एक अनिवार्य योग्यता

सभी सरकारी कर्मचारियों को कोर्स करने पर
100 प्रतिशत फीस रिफंड व 675 रुपए अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि

प्रशिक्षित फैकल्टी द्वारा प्रशिक्षण

Internet
ई-मेल अकाउंट खोलना
ई-बुक्स पढ़ना
विदेशी भाषा सीखना
टिकट बुकिंग
यु ट्यूब पर विडियो देखना
फोटो का ऑनलाइन स्टोरेज

MS Powerpoint
प्रजेंटेशन
फोटो एलबम
सर्टिफिकेट
पोस्टर, ग्रीटिंग कार्ड
कम्पनी प्रोफाइल
बिजनेस प्रजेंटेशन

MS-Word
बायोडेटा
निमंत्रण पत्र, प्रोजेक्ट रिपोर्ट
आई कार्ड
विज्ञापन/नोटिस
लेटर पेड/ऐनवल्प
विजिटिंग कार्ड्स

MS-Excel
बिजनेस प्लानर
हफ्ते के कामो की सूची
पॉकेटमनी प्लानिंग
जमा-खर्च
टेक्स केलकुलेटर
फोन डेटाबेस, डाटा विश्लेषण

राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

New **RS-CIT**
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

सनशाईन इंस्टीट्यूट

sunshininstitute9@gmail.com

ICICI बैंक के पास बस स्टैंड, केलवा, मो. 99500-84705, 79767-52935

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To